

फाइनल में खिताब से चूका अर्जेंटीना

स्पेन बना फुटबॉल का नया बादशाह

गोल्डन बूट :
किलियन एम्बाप्पे (फ्रांस)
गोल्डन बॉल :
रोड्री (स्पेन)
गोल्डन ग्लव :
उनाई सिमोन (स्पेन)
बेस्ट यंग प्लेयर :
पाउ कुबार्सी (स्पेन)
फेयर प्ले अवॉर्ड :
नीदरलैंड्स



स्पेन के कप्तान रोड्री ने फीफा वर्ल्ड कप २०२६ की ट्रॉफी के साथ जीत का जश्न मनाया.

९० मिनट तक स्पेनशि दबदबे की कहानी

स्पेन और अर्जेंटीना के बीच खेले गए फीफा वर्ल्ड कप फाइनल के पहले ९० मिनट के आंकड़े इस मुकाबले में स्पेन के जबरदस्त दबदबे की कहानी बयां करते हैं. बॉल पजेशन से लेकर पासिंग, अटैक और चांस क्रिएशन तक हर विभाग में स्पेन ने अर्जेंटीना को पीछे छोड़ दिया. वहीं लियोनेल मेसी की अगुआई वाली अर्जेंटीना की फॉरवर्ड लाइन पूरे समय स्पेनिश डिफेंस को कोई चुनौती नहीं दे सकी.

ये टीम चैम्पियन बनी थी. वहीं अर्जेंटीना की टीम चौथी बार वर्ल्ड कप खिताब नहीं जीत सकी. अर्जेंटीना की टीम इटली और ब्राजील जैसा कारनामा नहीं कर

पाई, जिसने बैक टू बैक टाइटल जीते थे. इटली ने १९३४ और १९३८ में खिताबी जीत हासिल की थी, जबकि ब्राजील की टीम ने १९५८ और १९६२ का संस्करण

अपने नाम किया था. फाइनल में अर्जेंटीना के कप्तान लियोनेल मेसी का जादू बिल्कुल भी नहीं चला. खिताबी मुकाबले तक पहुंचने का दोनों टीमों का सफर आसान नहीं रहा. स्पेन ने फ्रांस और पुर्तगाल जैसी मजबूत टीमों को हराया, जबकि अर्जेंटीना ने लगातार तीन नॉकआउट मुकाबलों में अतिरिक्त समय तक चले रोमांचक मैच जीतकर फाइनल में जगह बनाई थी. स्पेन की पहचान रही 'टिकी-टाका' शैली इस मुकाबले में पूरी तरह देखने को मिली. (पृष्ठ २ पर)

राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामला SIT ने सुप्रीम कोर्ट में सौंपी स्टेटस रिपोर्ट

नई दिल्ली : अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित विशेष जांच दल (SIT) ने अपनी स्टेटस रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट में सीलबंद लिफाफे में दाखिल कर दी है. यह रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट के उस निर्देश के बाद सौंपी गई है, जिसमें जांच की प्रगति से अदालत को अवगत कराने को कहा गया था. मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जयिमाल्य बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की तीन सदस्यीय पीठ ने SIT को जांच की प्रगति और अब तक के निष्कर्षों पर रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया था. सुप्रीम कोर्ट फिलहाल उन याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा है, जिनमें श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को मिले चढ़ावे में वित्तीय अनियमितताओं की सीबीआई से अदालत की निगरानी में जांच कराने की मांग की गई है.

एसआईटी ने उत्तर प्रदेश सरकार को अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट सौंप दी है और जांच पूरी करने के लिए अतिरिक्त समय मांगा है. शुरुआती जांच में मंदिर के चढ़ावे के प्रबंधन में कई सुरक्षा और प्रक्रियागत खामियां सामने आई हैं. जांच एजेंसी के मुताबिक, दानपात्रों तक कथित अनधिकृत पहुंच, चढ़ावे की गिनती और निगरानी व्यवस्था में कमजोरियां पाई गई हैं. अब तक इस मामले में आठ लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है.

पुरी रथयात्रा में भगदड़ एक की मौत; करीब १०० लोग घायल



नई दिल्ली : ओडिशा के पुरी में विश्व प्रसिद्ध भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के दौरान गुरुवार को भगदड़ जैसी स्थिति पैदा हो गई. इस घटना में एक श्रद्धालु की मौत हो गई वहीं, करीब १०० लोग घायल हैं. जिस श्रद्धालु की मौत हुई है, सामने आया है कि उसे सांस लेने में तकलीफ होने के बाद गंभीर अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया गया. जानकारी के मुताबिक, श्रद्धालु बड़ा डांडा (ग्रेड रोड) पर भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा के रथों के दर्शन

और रथ खींचने का इंतजार कर रहे थे. इसी दौरान भारी भीड़ के कारण अचानक धक्का-मुक्की शुरू हो गई, जिससे भगदड़ जैसी स्थिति बन गई. कई श्रद्धालु गिर पड़े और अफरातफरी मच गई. घटना के कुछ वीडियो भी सामने आए हैं, जो दिल दहलाने वाले हैं. एक वीडियो में दिख रहा है कि बड़ी हुई भीड़ के कारण स्थिति कंट्रोल से बाहर हो गई है और बड़ा डांडा की ओर भीड़ का दबाव बढ़ गया है. वहीं एक वीडियो में चप्पलें आदि भी बिखरी दिख रही हैं. घटना के तुरंत बाद पुलिस,

ओडिशा डिजास्टर रैपिड एक्शन फोर्स (ODRAF) और स्वास्थ्य विभाग की टीमों मौके पर पहुंचीं. घायलों को एंबुलेंस के जरिए पुरी जिला मुख्यालय अस्पताल और अन्य चिकित्सा केंद्रों में पहुंचाया गया. प्रशासन ने स्थिति पर जल्द काबू पाने का दावा किया है और भीड़ को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं. हालांकि, प्रशासन की ओर से अभी तक घायलों की आधिकारिक संख्या और घटना के कारणों को लेकर विस्तृत बयान जारी नहीं किया गया है. मामले की जांच की जा रही है.

श्रीकृष्ण को 'नमाजी' बताने पर विवाद

मौलाना जरजिश पर भड़के साधु-संत

नई दिल्ली : मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि विवाद के बीच मौलाना जरजिश अंसारी द्वारा भगवान श्रीकृष्ण को पांच वक्त का नमाजी और मुस्लिम बताने वाले वायरल वीडियो से ब्रज के साधु-संतों और हिंदू संगठनों में भारी आक्रोश फैल गया है. जिसके बाद उनके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की मांग की जा रही है.



उत्तर प्रदेश के इटावा निवासी मौलाना जरजिश अंसारी के एक बयान से बवाल मच गया. अंसारी ने झारखंड में २३ जून को एक तकरीर के दौरान भगवान श्रीकृष्ण को मुस्लिम बता डाला और भगवद गीता के श्लोक का गलत अर्थ निकालकर उन्हें पांच वक्त का नमाजी कह दिया था. सोशल मीडिया पर इस वायरल वीडियो के विरोध में ब्रज के साधु-संतों, हिंदू संगठनों और भाजपा नेताओं ने तीखा आक्रोश व्यक्त किया.

श्रीकृष्ण जन्मभूमि के पक्षकार महेंद्र प्रताप सिंह सहित अन्य संतों ने इस बयान को हिंदू आस्था के साथ गंभीर खिलवाड़ बताया. सनातन धर्मियों की भावनाओं को आहत करने वाले इस निन्दनीय कृत्य के विरोध में प्रदर्शन कर आरोपी की गिरफ्तारी की मांग की जा रही है.

महेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि मौलाना को भगवद गीता और उसके श्लोकों की कोई जानकारी नहीं है. इस बेहद गलत और विवादित बयान के लिए मौलाना जरजिश को पूरे हिंदू समाज से बिना शर्त माफी मांगनी चाहिए.

गहरी साजिश का हिस्सा हो सकता है वीडियो

इस पूरे मामले पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता मनीष शुक्ला ने भी मौलाना जरजिश अंसारी पर कड़ा कटाक्ष किया है. उन्होंने इसे करोड़ों श्रद्धालुओं की श्रद्धा पर बड़ा आघात बताते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण पूरी

राजनीतिक दलों के रवैये पर उठाए सवाल

भाजपा नेता ने यह भी आरोप लगाया कि देश के कुछ राजनीतिक दलों के दुलमुल रवैये के कारण ही ऐसे विवादित बयान देने वाले लोगों का मनोबल समय-समय पर बढ़ता रहता है. इसी वजह से ये लोग सनातन धर्म और देवी-देवताओं पर बेखौफ होकर विवादित टिप्पणियां करते हैं. फिलहाल, इस वायरल वीडियो के सामने आने के बाद से मथुरा और ब्रज के तमाम हिंदू संगठनों में भारी नाराजगी है. सभी एकजुट होकर आरोपी मौलाना के खिलाफ सख्त से सख्त कानूनी कदम उठाने और उसकी तुरंत गिरफ्तारी करने की मांग पर अड़े हुए हैं.

विवादित मौलाना को पाकिस्तान भेजने की मांग

श्री कृष्ण जन्म संघर्ष न्यास के अध्यक्ष दिनेश फलाहारी ने मौलाना पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ५००० वर्ष पहले अवतरित हुए थे और मौलाना के पूर्वज भी सनातनी थे. भगवान के बारे में ऐसा गलत बयान देने वालों को तुरंत पाकिस्तान भेज दिया जाना चाहिए. साध्वी इंदुलेखा ने भी इस मांग का पुर्णोर समर्थन करते हुए कहा कि आस्था के साथ खिलवाड़ करने वाले ऐसे तत्वों को देश में रहने का कोई अधिकार नहीं है. वहीं अनमोल दास जी महाराज ने भी निंदा करते हुए सख्त कार्रवाई की मांग की.



मुंबई में परीक्षा अनियमितताओं और पेपर लीक के मामलों के विरोध में कॉकरोच जनता पार्टी के समर्थकों ने प्रदर्शन किया. प्रदर्शनकारियों ने शिक्षामंत्री धर्मेश प्रधान के इस्तीफे की मांग करते हुए नारेबाजी की और परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की मांग उठाई.

खत्म हुआ इंतजार... भारत के नाम पहला खिताब

टोक्यो : भारतीय बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधु ने जापान ओपन सुपर ७५० टूर्नामेंट के महिला एकल का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया. रविवार को खेले गए फाइनल में सिंधु ने मेजबान जापान की अकाने यामागुची को लगातार दो सेट में २१-१७, २१-१७ से पराजित किया. ५० मिनट तक चले मुकाबले में सिंधु ने शुरू से अंत तक शानदार खेल का प्रदर्शन किया.

इस जीत के साथ सिंधु जापान ओपन का खिताब जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बन गई हैं. इससे पहले इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के किसी भी वर्ग में कोई भारतीय खिलाड़ी खिताब नहीं जीत सका था. इतना ही नहीं, पहली बार किसी भारतीय ने जापान ओपन के



फाइनल में पहुंचकर ट्रॉफी अपने नाम की है. सिंधु की इस ऐतिहासिक उपलब्धि ने भारतीय बैडमिंटन को नई पहचान दिलाई है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की मौजूदगी को और मजबूत किया है. यह जीत पीवी सिंधु के लिए इसलिए भी खास है क्योंकि उन्होंने

१९ महीने बाद BWF वर्ल्ड टूर में कोई खिताब अपने नाम किया है. इससे पहले उनका आखिरी खिताब दिसंबर २०२४ सैयद मोदी इंटरनेशनल में आया था. लंबे समय से फिटनेस और फॉर्म से जुझ रही सिंधु ने इस जीत से दमदार वापसी का संकेत दिया है.

'अगर ईरान ने कराई मेरी हत्या तो....', अमेरिका कर देगा बर्बाद, एक हजार मिसाइलें लॉक एंड लॉडिड : ट्रंप

वॉशिंगटन : अमेरिका और ईरान के बीच तनाव एक बार फिर खतरनाक मोड़ पर पहुंचता दिखाई दे रहा है. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान को सीधी सैन्य चेतावनी देते हुए दावा किया है कि अगर ईरानी सरकार ने उनकी हत्या या हत्या की कोशिश की तो अमेरिका की १००० मिसाइलें पहले से ही ईरान पर निशाना साधे तैयार हैं.

ट्रंप की खुली चेतावनी- १००० मिसाइलें तैयार

डोनाल्ड ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा कि अगर ईरानी सरकार दुनिया के किसी भी हिस्से से उनकी हत्या या हत्या की साजिश को अंजाम देती है या ऐसा करने की कोशिश करती है, तो अमेरिका तत्काल जवाब देगा. ट्रंप ने दावा किया कि १००० मिसाइलें पहले से ही इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान की ओर निशाना साधे तैयार हैं और जरूरत पड़ने पर हजारों अन्य मिसाइलें भी तुरंत तैनात की जाएंगी. उन्होंने कहा कि अमेरिकी सेना को पहले ही आदेश दिए जा चुके हैं और जरूरत पड़ने पर एक साल तक, और आवश्यकता पड़ने पर उससे भी अधिक समय तक, ईरान के हर हिस्से को पूरी तरह तबाह करने की क्षमता और तैयारी अमेरिका के पास है. ट्रंप ने लिखा, "इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ने हमसे बातचीत जारी रखने का अनुरोध किया है. हमने इसके लिए सहमति दी है, लेकिन अमेरिका ने उन्हें स्पष्ट शब्दों में बता दिया है कि सीजफायर अब खत्म हो चुका है."

सिंधु ने तोड़ा जापान ओपन का तिलिस्म

सेमीफाइनल में चेन युफेई को मात

पीवी सिंधु ने सेमीफाइनल में ओलंपिक चैम्पियन चेन युफेई को २१-१९, १५-१० से पराजित किया था. चीनी खिलाड़ी युफेई हैमस्ट्रिंग इंजरी के कारण यह मुकाबला पूरा नहीं कर पाई थीं. सिंधु पूरे टूर्नामेंट में शानदार लय में नजर आई और फाइनल में भी उसी आत्मविश्वास के साथ खेलते हुए खिताब अपने नाम कर लिया.

पीवी सिंधु ने अपने करियर में पहली बार BWF सुपर ७५० सीरीज खिताब जीता है. साथ ही, २०१९ में विश्व चैम्पियन बनने के

बाद यह उनका पहला बड़ा अंतरराष्ट्रीय खिताब भी है. देखा जाए तो ३१ वर्षीय सिंधु और अकाने यामागुची के बीच ३०वीं भिड़ंत रही. इस दौरान सिंधु ने १६ और यामागुची ने १४ मुकाबले जीते.

इस साल मलेशिया में दोनों की पिछली टक्कर अधूरी रह गई थी क्योंकि पहला गेम हारने के बाद अकाने यामागुची चोट के कारण मैच से हट गई थीं. हालांकि, उससे पहले खेले गए १० मुकाबलों में से ७ में जापानी खिलाड़ी ने जीत हासिल की थी. जापान ओपन के फाइनल में मिली यह जीत पीवी सिंधु के लिए सिर्फ खिताब ही नहीं, बल्कि अपनी सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्वी पर दमदार जवाब भी साबित हुई.

भारत का पहला प्राइवेट रॉकेट विक्रम-१ सफलतापूर्वक लॉन्च



अंतरिक्ष में भारतीय युवा जोश का 'आगमन'

नई दिल्ली : भारत की निजी स्पेस कंपनी स्काईरूट एयरोस्पेस ने १८ जुलाई २०२६ को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर से विक्रम-१ रॉकेट का सफल प्रक्षेपण किया। इस मिशन का नाम 'आगमन' रखा गया है, औसत उम्र २८ साल वाली इस युवा टीम के सफलता ने पूरे देश को गर्व महसूस कराया। यह लॉन्च न सिर्फ स्काईरूट के लिए, बल्कि पूरे भारतीय प्राइवेट स्पेस सेक्टर के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

इसरो के मिशन कंट्रोल रूम में हमेशा सफेद बालों और अनुभवी चेहरों वाले वैज्ञानिक दिखते थे, लेकिन स्काईरूट की लॉन्चिंग में ज्यादातर युवा इंजीनियर और वैज्ञानिक नजर आए। उनकी उम्र औसतन २८ साल है, यह दृश्य बहुत सुकून देने वाला और उम्मीद भरते वाला था। यह दिखाता है कि आज का भारतीय युवा कितनी बड़ी तकनीकी चुनौतियों को हल करने में सक्षम है और माहिर भी।

स्काईरूट की टीम के सदस्य ज्यादातर आईआईटी, NIT और अन्य टॉप इंजीनियरिंग कॉलेजों से पढ़े हुए युवा हैं। वे इसरो के पूर्व वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में काम कर रहे हैं। युवा जोश और अनुभवी मार्गदर्शन के इस कॉम्बो ने इस सफलता को संभव बनाया।

विक्रम-१ रॉकेट क्या है?
विक्रम-१ स्काईरूट का पहला ऑर्बिटल रॉकेट है। यह चार चरणों वाला रॉकेट है। पहले तीन चरण ठोस ईंधन पर काम करते हैं, जबकि चौथा चरण लिक्विड इंजन वाला है। इस लिक्विड इंजन को

जरूरत पड़ने पर दोबारा चालू किया जा सकता है, जिससे सैटेलाइट को सटीक ऑर्बिट में पहुंचाने में आसानी होती है। यह रॉकेट मुख्य रूप से छोटे उपग्रहों को लॉन्च करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस रॉकेट ने ४५० किलोमीटर ऊंची लो-अर्थ ऑर्बिट में कई छोटे सैटेलाइट पहुंचाया। विक्रम-१ की क्षमता करीब ५०० किलोग्राम तक के पेलोड को ले जाने की है।

आगमन मिशन का महत्व
आगमन स्काईरूट का पहला ऑर्बिटल मिशन है। कंपनी इसके बाद और दो विकासात्मक मिशन करेगी, जिसके बाद रॉकेट को पूरी तरह कॉमर्शियल लॉन्चिंग के लिए तैयार किया जाएगा।

प्राइवेट सेक्टर की क्षमता :
भारत में पहली बार किसी निजी कंपनी ने ऑर्बिटल रॉकेट लॉन्च किया है।

लागत में कमी : सरकारी लॉन्चिंग की तुलना में निजी कंपनियां सस्ते में लॉन्चिंग कर सकती हैं।

छोटे उपग्रहों की बढ़ती मांग : दुनिया भर में छोटे सैटेलाइट की जरूरत बढ़ रही है। विक्रम-१ जैसे रॉकेट इस मांग को पूरा करने में मदद करेंगे।

रोजगार और स्टार्टअप : इससे स्पेस से जुड़े नए स्टार्टअप और नौकरियां बढ़ेंगी।

स्काईरूट की यात्रा
स्काईरूट एयरोस्पेस की शुरुआत २०१८ में इसरो के पूर्व इंजीनियर पवन कुमार चंदाना और नागा भरत डाका ने की थी। २०२० में जब सरकार ने स्पेस सेक्टर को निजी कंपनियों के लिए खोल दिया, तब स्काईरूट ने तेजी से काम शुरू किया। २०२२ में कंपनी ने विक्रम-S

सब-ऑर्बिटल रॉकेट सफलतापूर्वक लॉन्च किया। अब २०२६ में विक्रम-१ के साथ वह ऑर्बिटल क्लब में शामिल हो गई है। रॉकेट का नाम भारत के स्पेस कार्यक्रम के जनक विक्रम साराभाई के नाम पर रखा गया है।

प्राइवेट स्पेस सेक्टर में बदलाव
२०२० से पहले स्पेस पूरी तरह सरकारी क्षेत्र था। लेकिन IN-SPACe (Indian National Space Promotion and Authorization Centre) के गठन के बाद निजी कंपनियों को रॉकेट, सैटेलाइट, ग्राउंड स्टेशन और लॉन्च सेवाएं देने की अनुमति मिल गई।

रॉकेट लॉन्चिंग बहुत जटिल काम है। इसमें इंजन, सामग्री, नेविगेशन, मौसम और सुरक्षा जैसी सैकड़ों चुनौतियां होती हैं। स्काईरूट की युवा टीम ने इन चुनौतियों को पार किया है।

आगे की राह में और बड़ी चुनौतियां हैं - जैसे बड़े रॉकेट बनाना, रीयूजेबल टेक्नोलॉजी विकसित करना और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करना। लेकिन शुरुआत बहुत अच्छी हुई है।

देश के लिए क्या मतलब है?
आत्मनिर्भर भारत : अब विदेशी कंपनियों पर निर्भरता कम होगी।

आर्थिक लाभ : स्पेस सेक्टर में निर्यात बढ़ेगा।

युवाओं को प्रेरणा: इंजीनियरिंग पढ़ रहे छात्रों को नया लक्ष्य मिलेगा।

वैज्ञानिक प्रगति : ज्यादा लॉन्चिंग से डेटा, रिसर्च और नई टेक्नोलॉजी बढ़ेगी।

विक्रम-१ की सफल लॉन्चिंग सिर्फ एक रॉकेट लॉन्च नहीं है। यह सपनों को हकीकत में बदलने की कहानी है। २८ साल की औसत उम्र वाली टीम ने दिखा दिया कि उम्र कोई बाधा नहीं होती जब इरादे मजबूत हों। यह लॉन्च भारत को स्पेस में नई ऊंचाइयों की ओर ले जाने वाला है। अब उम्मीद है कि आने वाले सालों में और कई निजी कंपनियां ऐसी उपलब्धियां हासिल करेंगी और भारत विश्व का प्रमुख स्पेस पावर बनेगा।



वारकरी संप्रदाय के भक्त धूप, बारिश, भूख और प्यास की परवाह किए बिना सैकड़ों किलोमीटर पैदल चलकर अपने आराध्य भगवान विठ्ठल के दर्शन के लिए पंढरपुर के लिए निकले हैं। वर्ष में एक बार भगवान पांडुरंग के चरणों में शीश झुकाने की उनकी गहरी श्रद्धा होती है। इसी श्रद्धा के साथ दिये घाट के पास पहुंचे हुए वारकरी

अमेरिका पर बिल्कुल भरोसा नहीं : ईरान

नई दिल्ली : अमेरिका और ईरान के बीच तनाव एक बार फिर बढ़ता नजर आ रहा है। हाल ही में दोनों देशों के बीच हुए समझौते के बावजूद ईरान ने साफ कर दिया है कि उसे अमेरिका पर बिल्कुल भरोसा नहीं है। ईरानी संसद अध्यक्ष मोहम्मद बाघेर गालिबाफ ने कहा है कि अगर अमेरिका ने समझौते से पीछे हटने या धोखा देने की कोशिश की तो ईरान पूरी ताकत के साथ जवाब देने के लिए तैयार है। वहीं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी सीजफायर को खत्म मानते हुए बातचीत को लेकर बड़ा बयान दिया है।

स्थानीय समयानुसार शुक्रवार को ईरान की संसद के अध्यक्ष मोहम्मद बाघेर गालिबाफ ने कहा कि अगर अमेरिका पिछले महीने हुए मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग (एमओयू) से मुकरता है तो ईरान "पूर्ण स्तर की रक्षा" के लिए पूरी तरह तैयार है। गालिबाफ ने इंडोनेशिया की पीपुल्स कंसल्टेटिव असेंबली के स्पीकर अहमद मुजानी

से मुलाकात के बाद अपने आधिकारिक टेलीग्राम पोस्ट में कहा कि हालिया शांति वार्ता के दौरान उन्होंने अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस से भी साफ शब्दों में कह दिया था कि ईरान को अमेरिका पर "जरा भी भरोसा नहीं" है। गालिबाफ ने अपने बयान में कहा, "वार्ता के दौरान मैंने अमेरिका के उपराष्ट्रपति से साफ कहा था कि हमें आप पर बिल्कुल भरोसा नहीं है। मेरी राय में केवल वही देश अमेरिका से बातचीत कर सकता है, जो युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार हो। हमने अपने देश की रक्षा की तैयारी कभी बंद नहीं की। जिस क्षण अमेरिका किसी भी समझौते से पीछे हटेगा, हम पूर्ण स्तर की रक्षा के लिए तैयार हैं। हम मजबूती से उसका सामना करेंगे और ईरानी जनता के अधिकारों की रक्षा करेंगे।"

गालिबाफ का यह बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी ईरान को लेकर कड़ा रुख अपनाया है।

ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रथ सोशल पर लिखा कि ईरान ने अमेरिका से बातचीत जारी रखने का अनुरोध किया है और अमेरिका इसके लिए तैयार है, लेकिन उसने ईरान को साफ शब्दों में बता दिया है कि दोनों देशों के बीच लागू सीजफायर अब खत्म हो चुका है। ट्रंप ने लिखा, "इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ने हमसे बातचीत जारी रखने का अनुरोध किया है। हमने इसके लिए सहमति दी है, लेकिन अमेरिका ने उन्हें बता दिया है कि सीजफायर अब खत्म हो चुका है।"

कतर के मध्यस्थ पहुंचे ईरान
कतर के वार्ताकार इसी बीच ईरान पहुंच गए हैं। उनका मकसद दोनों देशों के बीच बढ़ते तनाव को कम करना और अमेरिका-ईरान वार्ता को दोबारा शुरू कराने की कोशिश करना है। इस पहल का उद्देश्य वॉशिंगटन और तेहरान के बीच तनाव कम करना और भविष्य में फिर से बातचीत का रास्ता तैयार करना है।

स्पेन बना फुटबॉल का नया बादशाह

(पृष्ठ १ से)
टीम ने पूरे मैच में ६६ प्रतिशत बॉल पजेशन अपने पास रखा, जबकि अर्जेंटीना केवल ३४ प्रतिशत पजेशन तक सीमित रहा। इसका सीधा असर खेल की गति पर पड़ा और अधिकांश समय गेंद स्पेनिश खिलाड़ियों के पैरों में ही रही। पासिंग में भी स्पेन ने अपना क्लास दिखाया। स्पेन ने १० प्रतिशत सटीकता के साथ ५८३ सफल पास पूरे किए, जबकि अर्जेंटीना केवल २६८ सफल पास ही कर सका और उसकी पासिंग सटीकता ८० प्रतिशत रही। यानी स्पेन ने अर्जेंटीना की तुलना में दोगुने से भी ज्यादा सफल पास खेलते हुए मैच की लय पूरी तरह अपने नियंत्रण में रखी। आक्रमण की बात करें तो तस्वीर और भी चौकाने वाली रही। स्पेन ने अर्जेंटीना के गोल पर १० शॉट लगाए, जबकि अर्जेंटीना पूरे ९० मिनट में गोल पर एक भी शॉट नहीं लगा पाया। यही वजह रही कि स्पेन का Expected Goals (xG) १.२० दर्ज हुआ, जबकि अर्जेंटीना का xG ०.०० रहा। यह साफ दिखाता है कि अर्जेंटीना कोई बड़ा गोल करने का मौका ही नहीं बना सका।

चांस क्रिएशन में भी स्पेन का पलड़ा भारी रहा। स्पेन ने मैच में १ बिग चांस बनाया, हालांकि उसे गोल में नहीं बदल पाया। दूसरी ओर अर्जेंटीना इस मामले में भी शून्य पर रहा। इससे साफ है कि स्पेनिश डिफेंस ने अर्जेंटीना के अटैक को पूरी तरह बांधकर रखा।

मैच के दौरान अर्जेंटीना के गोलकीपर पर लगातार दबाव बना रहा। उन्हें १० सेव करने पड़े, जिससे टीम कई मौकों पर बड़े नुकसान से बच सकी। इसके उलट स्पेन के गोलकीपर को एक भी सेव नहीं करनी पड़ी, क्योंकि अर्जेंटीना गोल पर कोई प्रभावी हमला ही नहीं कर सका। ९० मिनट तक के आंकड़े बताते हैं कि स्पेन ने सिर्फ गेंद पर कब्जा ही नहीं रखा, बल्कि पासिंग, अटैक और मौके बनाने में भी पूरी तरह अपना वर्चस्व कायम रखा। वहीं अर्जेंटीना की टीम, जिसमें लियोनेल मेसी जैसे बड़े खिलाड़ी मौजूद थे, स्पेन की संगठित रणनीति और मजबूत डिफेंस के सामने पूरी तरह बेअसर नजर आईं। आंकड़ों के लिहाज से यह मुकाबला स्पेन के टिकी-टाका फुटबॉल का शानदार नमूना साबित हुआ, जिसमें अर्जेंटीना हर विभाग में संघर्ष करता दिखाई दिया। मेसी समेत पूरी फॉरवर्ड लाइन को स्पेन ने इस कदर खामोश रखा कि वे गोल पर एक भी निशाना नहीं साध सके। खेल के हर विभाग, चाहे वह पजेशन हो, पासिंग हो या आक्रमण में स्पेन ने अर्जेंटीना को बीना साबित कर दिया।

मितव्ययिता संस्कृति : आधुनिक समस्याओं का सनातन समाधान

डॉ. मनमोहन प्रकाश

आज मानव सभ्यता विज्ञान, तकनीक और भौतिक संसाधनों के उत्कर्ष के युग में पहुँच चुकी है। जीवन को अधिक सुविधाजनक, तेज और आरामदायक बनाने की होड़ ने मनुष्य को अभूतपूर्व साधन तो दिए हैं, किन्तु इसके साथ ही उसने उपभोग, अपव्यय और अंधाधुंध संसाधन-उपयोग की ऐसी संस्कृति को जन्म दिया है, जिसमें झ्र्णआवश्यकताङ्घ और झ्र्णलालचङ्घ के बीच की रेखा लगातार धुंधली होती जा रही है। परिणामस्वरूप जल संकट, प्रदूषण, खाद्य असुरक्षा, ऊर्जा संकट, पर्यावरणीय असंतुलन तथा जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर समस्याएँ मानव अस्तित्व के सामने चुनौती बनकर खड़ी हैं।

वास्तव में इन अधिकांश समस्याओं की जड़ केवल संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि का असंतुलन है। भारतीय चिंतन ने सदैव संयम, संतुलन और मितव्ययिता को सभ्य जीवन का आधार माना, जबकि आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने असीमित उपभोग को प्रगति का प्रतीक बना दिया। आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय जीवन-दर्शन में निहित मितव्ययिता के मूल्यों की पुनर्स्थापना की जाए।

भारतीय संस्कृति का मूल भाव प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना रहा है। यहाँ भोग नहीं, बल्कि संयमित उपभोग को आदर्श माना गया। उपनिषदों का प्रसिद्ध मंत्र - 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा', अर्थात् त्याग और संयम के साथ उपभोग करो जैसे मंत्र भारतीय

जीवन-दृष्टि का आधार रहा है।

इसी प्रकार 'सदा जीवन, उच्च विचार', 'अपरिग्रह', 'संयम' और 'संतोष' जैसे मूल्य भारतीय समाज की आत्मा माने जाते रहे हैं। हमारे ऋषियों ने प्रकृति को 'माता' कहा और मनुष्य को उसका संरक्षक माना, उपभोगकर्ता नहीं। भारतीय परिवार व्यवस्था में भी अनावश्यक अपव्यय को अनुचित समझा जाता था। भोजन, जल, वस्त्र और ऊर्जा जैसे हर संसाधन का उपयोग कृतज्ञता और मर्यादा के साथ किया जाता था।

दुर्भाग्य से आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने इन मूल्यों को धीरे-धीरे हाशिये पर धकेल दिया है। आज सामाजिक प्रतिष्ठा का मापदंड सादगी नहीं, बल्कि प्रदर्शन और उपभोग बनता जा रहा है। आवश्यकता से अधिक संग्रह और दिखावटी जीवनशैली ने समाज में अपव्यय की प्रवृत्ति को सामान्य बना दिया है। यही प्रवृत्ति अनेक संकटों का मूल कारण बन रही है।

आज भारत के अधिकांश शहर ग्रीष्म ऋतु आते ही जल संकट से जूझने लगते हैं। भूजल स्तर लगातार गिर रहा है, नदियाँ प्रदूषण का शिकार हो रही हैं और वर्ष भर प्रवाहमान बने रहने की अपनी क्षमता खोती जा रही हैं। वर्षाजल संवयन और जल संरक्षण के प्रयास भी अपेक्षित स्तर पर नहीं हो पा रहे हैं।इन परिस्थितियों के लिए केवल जनसंख्या वृद्धि को दोष देना पर्याप्त नहीं है। वास्तविक समस्या जल का अविवेकपूर्ण और अत्यधिक उपयोग भी है। घरों में अनावश्यक रूप से बहता पानी, अत्यधिक जल-उपयोग वाले उपकरण, खेती में असंतुलित सिंचाई पद्धतियाँ तथा उद्योगों द्वारा जल का दुरुपयोग आदि



सभी जल संकट को और गंभीर बना रहे हैं। भारतीय परंपरा में जल को 'जीवन' माना गया। नदियों को माता के रूप में पूजने की परंपरा केवल धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि जल संरक्षण का सांस्कृतिक संदेश भी थी। आज आवश्यकता है कि हम 'हर बूंद की कीमत' समझें और मितव्ययी दृष्टिकोण के साथ जल का

उपयोग करें। यदि प्रत्येक व्यक्ति संयमित जल-उपयोग को जीवनशैली का हिस्सा बनाए, तो जल संकट की भयावहता को काफी हद तक कम किया जा सकता है। वायु, जल, भूमि और ध्वनि प्रदूषण आज मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रदूषण प्रतिवर्ष लाखों लोगों

की असामयिक मृत्यु का कारण बनता है। इसके बावजूद मानव समाज अपनी उपभोगवादी आदतों को बदलने के लिए तैयार दिखाई नहीं देता।अत्यधिक उपभोग की प्रवृत्ति ने प्लास्टिक, रासायनिक पदार्थों और जीवाश्म ईंधनों के उपयोग को बेतहाशा बढ़ा दिया है। फैशन और दिखावे की संस्कृति ने झ्र्णउपयोग करो और फेंकोङ्घ की मानसिकता को जन्म दिया है। मोबाइल, कपड़े, सजावटी वस्तुएँ और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण आवश्यकता से अधिक खरीदे जा रहे हैं, जिससे कचरे और प्रदूषण का स्तर निरंतर बढ़ रहा है।

भारतीय जीवन-दर्शन में वस्तुओं के उपयोग में मर्यादा और पुनः उपयोग की परंपरा रही है। पुराने वस्त्रों, पात्रों और वस्तुओं का पुनः उपयोग केवल आर्थिक विवशता नहीं, बल्कि संसाधनों के प्रति समाज प्रवृत्ति बन चुकी है। दुखद यह है कि थाली में अन्न छोड़ते समय आज के मानव के मन में किसी प्रकार का अपराधबोध भी उत्पन्न नहीं होता।

भारतीय संस्कृति में अन्न को 'पूर्णब्रह्म' कहा गया है। भोजन को प्रसाद मानकर ग्रहण करने की परंपरा के अनुसार प्रदूषण प्रतिवर्ष लाखों लोगों

के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता का संदेश थी। भोजन हमारी थाली तक पहुँचने से पहले जल, भूमि, श्रम, ऊर्जा और समय जैसे अनेक संसाधनों से होकर गुजरता है। जब भोजन बर्बाद होता है, तब वास्तव में इन सभी संसाधनों की भी बर्बादी होती है।यदि हम ऋजितनी आवश्यकता, उतना उपभोगङ्घ का सिद्धांत अपनाएँ और भोजन को सम्मानपूर्वक ग्रहण करें, तो खाद्य संकट, कपड़े, सजावटी वस्तुएँ और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण आवश्यकता से अधिक खरीदे जा रहे हैं, जिससे कचरे और प्रदूषण का स्तर निरंतर बढ़ रहा है।

भारतीय जीवन-दर्शन में वस्तुओं के उपयोग में मर्यादा और पुनः उपयोग की परंपरा रही है। पुराने वस्त्रों, पात्रों और वस्तुओं का पुनः उपयोग केवल आर्थिक विवशता नहीं, बल्कि संसाधनों के प्रति समाज प्रवृत्ति बन चुकी है। दुखद यह है कि थाली में अन्न छोड़ते समय आज के मानव के मन में किसी प्रकार का अपराधबोध भी उत्पन्न नहीं होता।

भारतीय संस्कृति में अन्न को 'पूर्णब्रह्म' कहा गया है। भोजन को प्रसाद मानकर ग्रहण करने की परंपरा के अनुसार प्रदूषण प्रतिवर्ष लाखों लोगों के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता का संदेश थी। भोजन हमारी थाली तक पहुँचने से पहले जल, भूमि, श्रम, ऊर्जा और समय जैसे अनेक संसाधनों से होकर गुजरता है। जब भोजन बर्बाद होता है, तब वास्तव में इन सभी संसाधनों की भी बर्बादी होती है।यदि हम ऋजितनी आवश्यकता, उतना उपभोगङ्घ का सिद्धांत अपनाएँ और भोजन को सम्मानपूर्वक ग्रहण करें, तो खाद्य संकट, कपड़े, सजावटी वस्तुएँ और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण आवश्यकता से अधिक खरीदे जा रहे हैं, जिससे कचरे और प्रदूषण का स्तर निरंतर बढ़ रहा है।

भारतीय जीवन-दर्शन में वस्तुओं के उपयोग में मर्यादा और पुनः उपयोग की परंपरा रही है। पुराने वस्त्रों, पात्रों और वस्तुओं का पुनः उपयोग केवल आर्थिक विवशता नहीं, बल्कि संसाधनों के प्रति समाज प्रवृत्ति बन चुकी है। दुखद यह है कि थाली में अन्न छोड़ते समय आज के मानव के मन में किसी प्रकार का अपराधबोध भी उत्पन्न नहीं होता।

मितव्ययिता का सीधा असर खेल की गति पर पड़ा और अधिकांश समय गेंद स्पेनिश खिलाड़ियों के पैरों में ही रही। पासिंग में भी स्पेन ने अपना क्लास दिखाया। स्पेन ने १० प्रतिशत सटीकता के साथ ५८३ सफल पास पूरे किए, जबकि अर्जेंटीना केवल २६८ सफल पास ही कर सका और उसकी पासिंग सटीकता ८० प्रतिशत रही। यानी स्पेन ने अर्जेंटीना की तुलना में दोगुने से भी ज्यादा सफल पास खेलते हुए मैच की लय पूरी तरह अपने नियंत्रण में रखी। आक्रमण की बात करें तो तस्वीर और भी चौकाने वाली रही। स्पेन ने अर्जेंटीना के गोल पर १० शॉट लगाए, जबकि अर्जेंटीना पूरे ९० मिनट में गोल पर एक भी शॉट नहीं लगा पाया। यही वजह रही कि स्पेन का Expected Goals (xG) १.२० दर्ज हुआ, जबकि अर्जेंटीना का xG ०.०० रहा। यह साफ दिखाता है कि अर्जेंटीना कोई बड़ा गोल करने का मौका ही नहीं बना सका।

चांस क्रिएशन में भी स्पेन का पलड़ा भारी रहा। स्पेन ने मैच में १ बिग चांस बनाया, हालांकि उसे गोल में नहीं बदल पाया। दूसरी ओर अर्जेंटीना इस मामले में भी शून्य पर रहा। इससे साफ है कि स्पेनिश डिफेंस ने अर्जेंटीना के अटैक को पूरी तरह बांधकर रखा।

मैच के दौरान अर्जेंटीना के गोलकीपर पर लगातार दबाव बना रहा। उन्हें १० सेव करने पड़े, जिससे टीम कई मौकों पर बड़े नुकसान से बच सकी। इसके उलट स्पेन के गोलकीपर को एक भी सेव नहीं करनी पड़ी, क्योंकि अर्जेंटीना गोल पर कोई प्रभावी हमला ही नहीं कर सका। ९० मिनट तक के आंकड़े बताते हैं कि स्पेन ने सिर्फ गेंद पर कब्जा ही नहीं रखा, बल्कि पासिंग, अटैक और मौके बनाने में भी पूरी तरह अपना वर्चस्व कायम रखा। वहीं अर्जेंटीना की टीम, जिसमें लियोनेल मेसी जैसे बड़े खिलाड़ी मौजूद थे, स्पेन की संगठित रणनीति और मजबूत डिफेंस के सामने पूरी तरह बेअसर नजर आईं। आंकड़ों के लिहाज से यह मुकाबला स्पेन के टिकी-टाका फुटबॉल का शानदार नमूना साबित हुआ, जिसमें अर्जेंटीना हर विभाग में संघर्ष करता दिखाई दिया। मेसी समेत पूरी फॉरवर्ड लाइन को स्पेन ने इस कदर खामोश रखा कि वे गोल पर एक भी निशाना नहीं साध सके। खेल के हर विभाग, चाहे वह पजेशन हो, पासिंग हो या आक्रमण में स्पेन ने अर्जेंटीना को बीना साबित कर दिया।

महात्मा गाँधी ने कहा थाऋण्ण्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन हर व्यक्ति के लालच को नहीं। यह कथन आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। आधुनिक विकास मॉडल यदि केवल उत्पादन, उपभोग और लाभ पर आधारित रहेगा, तो समस्याएँ बढ़ती ही जाएँगी। वास्तविक विकास वही है, जिसमें प्रकृति, समाज और भविष्य की पीढ़ियों के हितों का संतुलन बना रहे।

समस्याओं का समाधान केवल सरकारी योजनाओं, कानूनों या तकनीकी आविष्कारों से नहीं होगा। इसके लिए सामाजिक चेतना और व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन आवश्यक है। जब तक व्यक्ति स्वयं अपव्यय छोड़ने के लिए तैयार नहीं होगा, तब तक कोई भी नीति स्थायी समाधान नहीं दे सकती।

आज मानवता जिस संकटपूर्ण मोड़ पर खड़ी है, वहाँ केवल संसाधनों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है; उनका संतुलित, न्यायपूर्ण और जिम्मेदार उपयोग अधिक आवश्यक है। यदि हम मनुष्य भारतीय जीवन-दर्शन में निहित मितव्ययिता, संयम और संतुलन के मूल्यों को पुनः स्वीकार नहीं करेगा, तो जल, खाद्य, ऊर्जा और पर्यावरण संबंधी समस्याओं का स्थायी समाधान असंभव बना रहेगा।

समय की माँग है कि हम अपव्यय की संस्कृति से बाहर निकलें और मितव्ययिता को केवल आर्थिक व्यवहार नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन के रूप में पुनर्स्थापित करें। क्योंकि प्रकृति के संसाधन सीमित हैं, जबकि मानव की इच्छाएँ असीमित। और जब तक इच्छाओं पर संयम स्थापित नहीं होगा, तब तक समस्याओं का समाधान केवल कल्पना बनकर ही रह जाएगा।

गर्मी... यूरोप बनाम भारत!

यूरोप में सर्दी के अनुकूल बर्नी इमारतें, ऐसी की कमी, लंबे दिन और रात का ऊंचा तापमान ४० डिग्री को जानलेवा आपातकाल बना देते हैं इसके विपरीत बेहतर शारीरिक अनुकूलन, उचित जीवनशैली और हीटवेव एक्शन प्लान के कारण भारत में इसे सहना आसान है। जब यूरोप में तापमान ४० डिग्री पहुंचता है तो लोग कहते हैं कि जीवन रुक गया है। अस्पताल भर जाते हैं। मौतें बढ़ जाती हैं। वहीं भारत में कई इलाकों में ४०-४५ डिग्री आम बात है, लोग काम करते रहते हैं। यह फर्क सिर्फ तापमान का नहीं, बल्कि कई अन्य कारणों की वजह से है। सबसे महत्वपूर्ण अंतर नमी का है। भारत में गर्मी के मौसम में नमी बहुत ज्यादा होती है, लेकिन लोग इससे अभ्यस्त हैं। यूरोप में जब ४० डिग्री आता है तो अक्सर सूखी गर्मी होती है, लेकिन कई बार नमी भी बढ़ जाती है। जब नमी ज्यादा होती है तो पसीना सूखता नहीं है। शरीर का तापमान नियंत्रित नहीं हो पाता। इसे वेट बल्ब टेम्परेचर कहते हैं। यूरोप में ४० डिग्री के साथ अगर नमी ६०-७०% हो जाए तो इंसान के लिए खतरनाक हो जाता है। भारत में लोग लंबे समय से गर्मी झेल रहे हैं, इसलिए उनका शरीर बेहतर तरीके से ढल जाता है।

यूरोप की इमारतें ठंड के लिए बनाई गई हैं। दीवारें मोटी, इंसुलेशन अच्छा पर गर्मी निकालने की व्यवस्था कम। जब ४० डिग्री की गर्मी पड़ती है तो घर के अंदर भी तापमान बहुत बढ़ जाता है। वहां एयर कंडीशनर कम घरों में हैं। भारत में घरों में छतें ऊंची, खिड़कियां बड़ी, पंखे, कूलर और ऐसी का इस्तेमाल आम है। लोग दोपहर में आराम करते हैं। शाम को काम करते हैं। यूरोप में ऐसी आदत नहीं है। स्कूल, ऑफिस और अस्पताल भी गर्मी के लिए तैयार नहीं होते। यूरोप हाई एल्टीट्यूड पर स्थित है, इसलिए वहां गर्मियों में दिन बहुत लंबे (१५ से १७ घंटे) हो जाते हैं। साफ आसमान और कम वायु प्रदूषण के कारण सीधी धूप बहुत तेज और चुपने वाली लगती है। यूरोप की हीटवेव में रात का तापमान भी बहुत ऊंचा रहता है। शरीर को ठंडा होने का मौका नहीं मिलता। लगातार गर्मी से थकान, दिल का दौरा और मौतें बढ़ जाती हैं। भारत में दिन में गर्मी ज्यादा होती है लेकिन रात में तापमान काफी गिर जाता है। इससे शरीर को राहत मिलती है। यही वजह है कि भारत में ४० डिग्री सहन करना यूरोप की तुलना में आसान पड़ता है। भारतीय शरीर गर्मी के लिए ज्यादा तैयार रहता है। बरपन से गर्मी में खेलना, काम करना सिखाया जाता है। पसीना आना, ज्यादा पानी पीना, छाछ-निम्बू पानी जैसी चीजें आम हैं। यूरोप में ज्यादातर लोग ठंडे मौसम में रहते हैं। उनकी त्वचा पतली, शरीर गर्मी सहने के लिए कम तैयार होता है। खासकर बुजुर्ग और बच्चे जल्दी प्रभावित होते हैं। फ्रांस, जर्मनी, इटली जैसी जगहों पर ४० डिग्री में हजारों अतिरिक्त मौतें हो जाती हैं। भारत में हीटवेव एक्शन प्लान है। स्कूलों की छुट्टी, पानी की व्यवस्था, जागरूकता अभियान चलते हैं। यूरोप में अचानक गर्मी आने पर सरकारी भी हेरान रह जाती हैं। अस्पताल तैयार नहीं होते, बिजली की मांग बढ़ने से ग्रिड फेल हो जाते हैं। टेनै रुक जाती हैं, सड़कें पिघल जाती हैं। वैज्ञानिक कहते हैं कि जलवायु परिवर्तन यूरोप को तेजी से गर्म कर रहा है। पहले वहां ४० डिग्री बहुत दुर्लभ था, अब लगभग हर साल हो रहा है। यूरोप अब भी अनुकूलन की प्रक्रिया में है। भारत गर्म देश है, इसलिए ४०-४५ डिग्री नया नहीं। लेकिन भारत की भी चिंता करनी चाहिए क्योंकि गर्मी और बढ़ रही है। दिल्ली, राजस्थान में ४८-५० डिग्री भी पहुंच रहा है। यूरोप को भारत से सीखना चाहिए कि हल्के कपड़े, दिन की आदतें बदलना, पानी की व्यवस्था और सस्ते कूलिंग सिस्टम लागूआएं, जबकि भारत को यूरोप से सीखना चाहिए कि बेहतर मौसम पूर्वानुमान, हेल्थ अलर्ट सिस्टम और लंबे समय का प्लानिंग करें। ४० डिग्री तापमान हर जगह एक समान नहीं होता। यूरोप में यह आपातकाल जैसा है क्योंकि वहां की जलवायु, इमारतें, आदतें और तैयारियां ठंड के हिसाब से हैं। भारत में यह चुनौती है लेकिन सहनशक्ति ज्यादा है। जलवायु परिवर्तन के युग में दोनों देशों को अपनी रणनीति बदलनी होगी। गर्मी अब सामान्य हो रही है. इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। सही तैयारियों से हम इस चुनौती से निपट सकते हैं और जानें बचा सकते हैं।

दिल्ली: वायु प्रदूषण के साथ ओजोन प्रदूषण की चुनौती

ललित गर्ग

राजधानी दिल्ली वर्षों से वायु प्रदूषण की भयावह समस्या से जूझती रही है। हर सदी में धुंध की मोटी चादर, जहरीली हवा और दमघोड़ वातावरण राष्ट्रीय चिंता का विषय बनते हैं। अब तक इस संकट की चर्चा मुख्यतः पीएम २.५, पीएम १०, पराली और वाहनों के धुएँ तक सीमित रही, लेकिन अब एक नया और अधिक खतरनाक खतरा तेजी से उपरकर सामने आया है-भूतलीय (ग्राउंड लेवल) ओजोन प्रदूषण। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट की हालिया रिपोर्ट ने स्पष्ट किया है कि दिल्ली-पनसीआर ही नहीं, जयपुर, चंडीगढ़ और अहमदाबाद जैसे शहर भी ओजोन प्रदूषण की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। यह प्रदूषण दिखाई नहीं देता, लेकिन इसके दुष्प्रभाव धीरे-धीरे मानव बीमार, कृषि और पर्यावरण को भीतर तक बीमार कर रहे हैं। विडम्बना यह है कि प्रदूषण जैसे गंभीर विषय को भी अक्सर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित कर दिया जाता है। कभी किसानों की पराली को संपूर्ण दोषी ठहरा दिया जाता है तो कभी केवल वाहनों को। जबकि वास्तविकता कहीं अधिक व्यापक है। यदि समस्या की जड़ तक पहुँचना है तो अनियोजित शहरीकरण, अधाधुंध औद्योगिकीकरण, ऊर्जा उपभोग की वर्तमान व्यवस्था और विकास के मौजूदा मॉडल पर गंभीर पुनर्विचार करना होगा।

दिल्ली आज केवल देश की राजधानी नहीं, बल्कि देश का सबसे बड़ा प्रदूषण हॉटस्पॉट भी बन चुकी है। गर्मियों में बढ़ते तापमान, तेज धूप और वाहनों एवं उद्योगों से निकलने वाली नाइट्रोजन ऑक्साइड तथा वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों की रासायनिक प्रतिक्रिया से भूतलीय ओजोन बनती है। यह वही ओजोन नहीं है जो वायुमंडल की ऊपरी परत में पृथ्वी को पराबैंगनी किरणों से बचाती है। धरातल पर बनने वाली ओजोन एक विषैली गैस है, जो फेफड़ों की कार्यक्षमता

कम करती है, दमा के रोगियों की स्थिति बिगाड़ती है, आँखों में जलन पैदा करती है तथा हृदय रोगों का जोखिम बढ़ाती है। आज दिल्ली-पनसीआर में बड़ी संख्या में लोग सांस लेने में कठिनाई, एलर्जी और अस्थमा जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जिनमें ओजोन प्रदूषण की भूमिका लगातार बढ़ रही है। दिल्ली सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन, नई इलेक्ट्रिक वाहन नीति, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा, चार्जिंग स्टेशन विकसित करने की दिशा में और पुराने प्रदूषणकारी वाहनों को चरणबद्ध तरीके से हटाने जैसे निर्णय निश्चित रूप से सकारात्मक हैं। यदि इन योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन होता है तो आने वाले वर्षों में प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में सार्थक परिवर्तन देखने को मिल सकता है। लेकिन केवल वाहन नीति से समस्या का समाधान संभव नहीं है।

वास्तविक संकट अनियोजित शहरीकरण का है। पिछले दो दशकों में दिल्ली और उससे लगे क्षेत्रों में जिस तेजी से खेत, तालाब और हरित क्षेत्र कंक्रीट के जंगलों में बदले हैं, उसने प्राकृतिक संतुलन को गहरा आघात पहुँचाया है। जहाँ कभी वर्षा का पानी धरती में समा जाता था, वहाँ अब सीमेंट और डामर की सतह है। पारंपरिक जलस्रोत मिट गए, पेड़ों की संख्या घटी और गर्मी बढ़ती गई। यही कारण है कि शहरों का तापमान आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कई डिग्री अधिक रहने लगा है। यही अतिरिक्त गर्मी ओजोन बनने की प्रक्रिया को और तेज करती है। आज महानगरों का विस्तार विकास का प्रतीक माना जाता है, लेकिन यह विकास प्रकृति की कीमत पर हो रहा है। शहरों को सड़कें चाहिए, बिजली चाहिए, आवास चाहिए, उद्योग चाहिए। इन सबके लिए खेत समाप्त हो रहे हैं, जंगल कट रहे हैं और जलस्रोत नष्ट हो रहे हैं। परिणामस्वरूप प्रदूषण केवल

हवा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जल, मिट्टी और जैव विविधता भी प्रभावित हो रही है। विकास की यह दिशा अंततः मानव जीवन के विरुद्ध खड़ी दिखाई देती है। दिल्ली में निजी वाहनों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। सार्वजनिक परिवहन की उपलब्धता और गुणवत्ता अभी भी इतनी प्रभावी नहीं हो सकी कि लोग निजी वाहनों का त्याग करें। इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना स्वागतयोग्य है, किंतु यह भी ध्यान रखना होगा कि बिजली यदि कोयला आधारित ताप विद्युत संयंत्रों से आएगी तो प्रदूषण केवल एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होगा। इसलिए स्वच्छ ऊर्जा, सौर ऊर्जा और हरित परिवहन को समानांतर गति से बढ़ाना आवश्यक है।

ओजोन प्रदूषण केवल मानव स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह कृषि उत्पादन को भी प्रभावित करता है। वैज्ञानिक अध्ययनों में पाया गया है कि ओजोन फसलों की प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया को प्रभावित कर उत्पादन घटा देती है। ऐसे समय में जब जलवायु परिवर्तन, अनिश्चित मानसून और बढ़ती गर्मी पहले ही किसानों के सामने बड़ी चुनौती बने हुए हैं, ओजोन प्रदूषण कृषि संकट को और गहरा कर सकता है। राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक शहरों में वायु गुणवत्ता सुधारने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, किंतु अब समय आ गया है कि इसकी रणनीति का विस्तार किया जाए। केवल पार्टिकुलेट मैटर पर ध्यान देने के बजाय ओजोन जैसे द्वितीयक प्रदूषकों की निगरानी, वैज्ञानिक अध्ययन और नियंत्रण पर भी समान बल देना होगा। वायु गुणवत्ता निगरानी तंत्र को अधिक व्यापक, आधुनिक और पारदर्शी बनाना होगा। समस्या के समाधान में नागरिकों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। कचरा जलाना, निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल, खुले में इंधन जलाना, प्लास्टिक और औद्योगिक कचरे का अनुचित निस्तारण जैसी आदतों

में परिवर्तन लाना होगा। अधिक से अधिक सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, साइकिल और पैदल चलने की संस्कृति को बढ़ावा देना होगा। शहरों में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण, हरित पट्टियों का विकास और पारंपरिक जलस्रोतों का पुनर्जीवन भी प्रदूषण नियंत्रण की प्रभावी रणनीति का हिस्सा होना चाहिए। वायु प्रदूषण केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक संकट भी है। बढ़ती बीमारियाँ स्वास्थ्य व्यवस्था पर बोझ डालती हैं, कार्यक्षमता घटाती हैं और करोड़ों रुपये की आर्थिक हानि का कारण बनती हैं। सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि प्रदूषण बच्चों और युवाओं के भविष्य को प्रभावित कर रहा है। यदि आज निर्णायक कदम नहीं उठाए गए तो आने वाली पीढ़ियों को इसका कहीं अधिक गंभीर मूल्य चुकाना पड़ेगा।

दिल्ली सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदम स्वागतयोग्य हैं और उनसे सकारात्मक परिणामों की आशा की जा सकती है, किंतु यह तभी संभव होगा जब केंद्र, राज्य, स्थानीय निकाय, उद्योग, वैज्ञानिक समुदाय और नागरिक समाज मिलकर समन्वित प्रयास करें। प्रदूषण किसी एक सरकार, एक मौसम या एक कारण की समस्या नहीं है। यह हमारे विकास मॉडल, जीवनशैली और पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण का परिणाम है। आज आवश्यकता दोषारोपण की नहीं, बल्कि दूरदर्शी नीति और सामूहिक उत्तरदायित्व की है। यदि हम स्वच्छ हवा चाहते हैं तो केवल प्रदूषण कम करने की योजनाएँ नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलित विकास की नई संस्कृति विकसित करनी होगी। अन्यथा ओजोन जैसी अदृश्य गैसें हमारे शहरों को धीरे-धीरे बीमार करती रहेंगी और विकास का यह मॉडल स्वयं मानव सभ्यता के लिए सबसे बड़ा संकट बन जाएगा।

लेखक, पत्रकार एवं स्तंभकार दिल्ली- ९८११०५११३३

अवधेश कुमार

शरद पवार ने देश की विदेश नीति पर आंतरिक राजनीतिक व्यवहार के संदर्भ में जो कुछ कहा है उस पर गंभीरता से विचार होना चाहिए। उन्होंने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत के बाहर देश की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए काम कर रहे हैं। हमारे राजनीतिक विचार अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन जब देश के सम्मान की बात आती है तो राजनीतिक मतभेदों को बीच में नहीं लाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पांच दिवसीय विदेश यात्रा पर भारत के अंदर राजनीतिक व गैर राजनीतिक मोर्चें पर हो रही टिप्पणियों के संदर्भ में उनका यह मंतव्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त अरब अमीरात से आरंभ कर स्वीडन, नीदरलैंड, नॉर्वे और इटली की द्विपक्षीय यात्रा की तथा नावें की राजधानी ओस्लो में स्कैंडिनेवियाई भारत शिखर सम्मेलन में शामिल हुए। प्रधानमंत्री के समक्ष अपने राष्ट्रीय हित को साधने का उद्देश्य था और इन यात्राओं पर विशेषणों का मत यही है कि उसमें उन्हें अधिकतम सफलता मिली। किंतु राजनीतिक और गैर राजनीतिक एक्टिविज्म और सोशल मीडिया पर उनके विदेश में रहते हुए ही हमले शुरू हो गए। सारे हमलों? व? आलोचनाओं के हल्ला बोल में ऐसा एक तथ्य नहीं आया जिसमें बताया गया हो कि अमुक बिंदु पर प्रधानमंत्री ने अपने राष्ट्रीय हित के अनुकूल काम नहीं किया। जाहिर है कि विरोध केवल राजनीतिक मतभेदों और असहमतियों के इर्द-गिर्द था। यह राजनित्जनक है क्योंकि भारत की भौगोलिक सीमाओं के अंदर की राजनीतिक असहमतियां और मतभेद सीमाओं से बाहर चला जाए तो राष्ट्रीय हित प्रभावित होता है। इसका अर्थ है कि हम देश हित को प्राथमिकता देने की जगह अपने राजनीतिक, व्यक्तिगत हित को प्राथमिकता दे रहे हैं या फिर हमारा वैचारिक दुराग्रह हावी है।

ऐसा नहीं है कि पवार की मोदी से पूरी तरह सहमति है। महाराष्ट्र में आज शरद पवार की राकांपा शक्तिहीन है तो इसी कारण क्योंकि स्वर्गीय अजीत पवार ने विद्रोह कर भाजपा से हाथ मिला लिया। बावजूद हमारी पारंपरिक राजनीति, जिसका प्रतिनिधित्व करने वाले गिने-चुने नेता रह गए हैं, में यही व्यवहार लंबे समय तक रहा है। देश में हमारी असहमति होती है, आरोप - प्रत्यारोप करते हैं लेकिन जब विदेशों की, अंतरराष्ट्रीय मंच की बात आती है तो देश साथ खड़ा होता है। अंतरराष्ट्रीय मंच पर या विदेश में प्रधानमंत्री



किसी राजनीतिक दल का नहीं भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहां केवल राष्ट्रहित सर्वोपरि होना चाहिए। पत्रकारिता में भी अनेक बार प्रधानमंत्री या दूसरे मंत्रियों के विदेश में दिए बयानों से असहमति होती थी लेकिन वरिष्ठ लोग बताते थे कि विदेश नीति पर हमारी आलोचना का स्वर ऐसा नहीं हो सकता।

अपवाद हर समय रहे हैं पर वह कभी मुख्य धारा नहीं बना। इसलिए ज्यादातर विदेशी यात्राओं या विदेशी मेहमानों के भारत आगमन पर हुए समझौते आदि पर राजनीतिक दलों व मीडिया की ध्वनि एक समान होती थी। जैसे-जैसे राजनीतिक मतभेद बढ़े, भारत और वैश्विक स्तर पर अलग-अलग राजनीतिक धाराओं, निहित स्वार्थी संगठनों, समूहों के बीच संपर्क संबंध बढ़ा इस स्वाभाविक व्यवहार में अंतर आता गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्ता शीर्ष पर आने के बाद यह अतिवाद तक चला गया है। इसी का प्रकटिकरण इस समय दिखा है।

एक भारतवासी के नाते इस समय हमारा उद्देश्य क्या होना चाहिए? पश्चिम एशिया संकट यानी ईरान अमेरिका इजरायल टकराव और तनाव ने इंधन आपूर्ति में उथल-पुथल पैदा कर दिया है। हार्मूज जलडमरूमध्य की खतरनाक नाकेबंदी से निपटटना विश्व के लिए मुश्किल हो रहा है। इसमें पेट्रोल डीजल आदि के लिए आयात पर निर्भर भारत या अन्य देशों के लिए दूरगामी दृष्टि से आपूर्ति की सुनिश्चित व्यवस्था करना, देशों के संबंधों में हो रहे बदलावों के साथ सामंजस्य स्थापित

करना या अस्थिरता के काल में उसका आधार बनाते रहना तथा भविष्य में बनने वाले अंतरराष्ट्रीय समीकरणों की दृष्टि से ऐसी स्थिति में होना ताकि देश के रूप में हम कहीं अलग-थलग न पड़ें। मोटा - मोटी प्रधानमंत्री की यात्रा में यही लक्ष्य समाहित होगा।

इन सबमें यहां विस्तार से जाने की आवश्यकता नहीं। आप चाहे भाजपा के सरकार के विरोधी हों या समर्थक दृष्टि एक ही होनी चाहिए कि प्रधानमंत्री की यात्राओं के दौरान उन देशों के नेताओं के साथ द्विपक्षीय और प्रतिनिधिमंडलों की बातचीत, संयुक्त घोषणाओं तथा संपन्न समझौतों में क्या-क्या हुआ? जब आप गहराई से उन सबको देखेंगे तो आपका विचार अपने आप बदल जाएगा। दुर्भाग्य से हम उन पर सरसरी दृष्टि भी डालना नहीं चाहते। किसी पत्रकार ने नॉर्वे में दोनों प्रधानमंत्रियों के स्वागत वक्तव्य में निर्धारित प्रोटोकॉल के विपरीत जबनर कैमरे घूमाकर भारत के प्रधानमंत्री से मानवाधिकार एवं प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रश्न पूछे और वह हमारे लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गया। नॉर्वे के साथ हमारे समझौते, हमारे यहां पेंशन फंड से २८ अरब डॉलर के निवेश की योजना, ब्लू इकोनामी साझेदारी, हरित साझेदारी आदि पर हमने चर्चा नहीं की। यही नहीं नॉर्दिक भारत शिखर सम्मेलन में औपचारिक रूप से स्ट्रेस्ट ग्रীন टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप यानी विश्वसनीय हरित तकनीक एवं अन्वेषण रणनीतिक साझेदारी का दर्जा मिलना और कातिक परिशद में भी पर्यवेक्षक की

हैसियत हासिल करना इनके लिए हास्य पर चला गया।

इसी तरह इटली की यात्रा में प्रधानमंत्री ने पार्लें कंपनी के सामान्य मेलोडी ट्रॉफी की प्रधानमंत्री जार्जिया मेलोनी को भेंट करते हुए एक रोचक वीडियो पोस्ट किया। इटली के साथ हमारी ठोस विशेष रणनीतिक साझेदारी कायम हुई, भारत और इटली में निर्माण करो तथा विश्व को आपूर्ति करो का ढांचा वैश्विक आपूर्ति शृंखला में भारत के स्थान की दृष्टि से महत्वपूर्ण था, अनेक मुद्दों पर हमारे साथ सहमति बनी जिनमें आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष भी है। इस यात्रा में स्वीडन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिया और काम करने वाली पत्रकार और कार्टून छापने वाले अखबार के देश नावें ने भी। संयुक्त राष्ट्र संघ की खाद्य और कृषि संगठन ने प्रधानमंत्री को विशेष रूप से सम्मानित किया। इन सब पर चर्चा की जगह हमारे यहां टौफी वीडियो को लेकर ऐसी टिप्पणियां की जा रही हैं जिनमें कई को देखने सुनने या पढ़ने में शर्म आए। भारत जैसे देश में विमर्श का यह स्तर किसी को भी अंदर से परेशान कर देगा।

क्या हम ऐसा करते समय विचार भी नहीं करते कि एक देश के रूप में विदेश में हमारी कैसी छवि बनेगी? यहीं पर शरद पवार का यह कथन प्रासंगिक हो जाता है कि जब भी राष्ट्रीय हित के लिए सामूहिक रूप से काम करने का मौका मिले तो सभी को एक साझा उद्देश्य के साथ जुड़ना चाहिए और देश की प्रतिष्ठा मजबूत करने शुरू हुई मनरेगा में सिर्फ १०० दिन रोज़गार की गारंटी दी जाती थी। उन्होंने कहा कि आज प्रधानमंत्री श्री मोदी की नई रणनीति के तहत विकसित भारत- जी राम जी योजना में मजदूरों के लिए पूरे १२५ दिन तक काम की पक्की गारंटी दी जा रही है। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ दिनों की बढ़ोतरी नहीं, बल्कि सोच में बदलाव है, अब लक्ष्य यह है कि कोई हाथ खाली न रहे। उन्होंने गर्व के साथ बताया कि नई योजना के लागू होते ही पहले दिन ही देशभर में लाखों मजदूरों को काम मिला है और मनरेगा को बेहतर स्वरूप में बदलकर वीबी- जी राम जी के रूप में लागू किया जा रहा है।

पहले ही साल में १.५१ लाख करोड़ रु. का प्रावधान, ५ साल में ७.५ लाख करोड़ रु. का लक्ष्य
केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने योजना के वित्तीय पक्ष पर विस्तार से बात करते हुए कहा कि विकसित भारत- जी राम जी योजना के पहले ही वर्ष में केंद्र सरकार की हिस्सेदारी ९५,००० करोड़ रु. से अधिक रहेगी और राज्यों की ४०% हिस्सेदारी जोड़कर यह वार्षिक व्यय १.५१ लाख करोड़ रु. के आसपास पहुँचता है। श्री शिवराज सिंह ने बताया कि अगले ५ साल में इस योजना के तहत कुल ७.५ लाख करोड़ रु. खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है। यह मन देश की २.८६ लाख पंचायतों तक पहुँचकर हर पंचायत को प्रति वर्ष औसतन २ करोड़ रु. से ज्यादा की राशि देगा जिससे गाँवों में रोजगार भी बढ़ेगा और स्थायी परिसंपत्तियाँ भी बनेंगी।

रोज़गार की कानूनी गारंटी- १५ दिन में काम, वर्ना बेरोज़गारी भत्ता

में मदद करनी चाहिए। कोई भी प्रधानमंत्री या विदेश मंत्री देश के बाहर होते हैं तो अपने दृष्टिकोण से वह देश के भविष्य और सम्मान को ही केंद्र में रखते हैं। कई बार इनमें गलतियाँ भी हुई है। आज के दौर के अनुसार उनकी आलोचना भी अस्वाभाविक नहीं है किंतु आलोचना तथ्यों के आधार पर होगी। अखिर जॉर्जिया मेलोनी को मेलोडी ट्रॉफी भेंट करने से हमारी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को कैसे नुकसान पहुँचा?इटली प्राचीन सभ्यता संस्कृति वाला यूरोप का महत्वपूर्ण और मजबूत देश है। वर्तमान तनावपूर्ण अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में दो प्रधानमंत्रियों के बीच इस तरह के सहज संबंध, मुस्कान और ठहाके कूटनीति की दुनिया में बहुत बड़ी उपलब्धि है। एक बार दो नेताओं के बीच सहज सामान्य संवाद निर्मित हो गए तो जटिल से जटिल मुद्दों पर भी सहमति बनती है तथा रास्ता निकल जाता है। दूसरे, इससे हमारे देश के एक सामान्य ब्रांड का भी जबरदस्त विपणन हुआ। इस विषय पर स्थापित अंतरराष्ट्रीय मीडिया की टिप्पणियां देखेंगे तो सकारात्मक भाव पैदा होगा।

कूटनीति में एक सामान्य वस्तु का उपयोग कर माहौल बदल देना, दुनिया को संदेश देना और उन्हें अंतरराष्ट्रीय संबंधों में परस्पर व्यवहार का रास्ता दिखा देना सामान्य बात नहीं है। अभी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का चीन दौरा हुआ और राष्ट्रपति श्री जिनपिंग के साथ उनकी बातचीत के सारे तस्वीर और वीडियो देख लीजिए। इसके बाद रुस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की चीन यात्रा हुई। दोनों नेताओं के सारे तस्वीर और वीडियो देख लीजिए। पुतिन और श्री जिनपिंग के बीच सामान्य संबंध हैं। बावजूद उनके व्यवहार में सहज मुस्कान नहीं दिखेगा। तनावपूर्ण और अनिश्चितताओं की दुनिया में दो महत्वपूर्ण देश के नेताओं के बीच सरल सहज मुस्कान और संबंध कूटनीति के लिए नया मानक है। कायदे से देश में इसकी प्रशंसा होनी चाहिए। भारत ने अपने लक्ष्य के अनुरूप यात्रा से सारी उपलब्धियां हासिल की जिसकी ओर तत्काल दृष्टि थी। दूसरे देश भी अपने हित के अनुसार काम कर रहे थे और उन्हें भी प्राप्त हुआ। पर मूल बात यह है कि हम एक राष्ट्र के रुप में कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं? शरद पवार जैसे वरिष्ठ नेता अब ज्यादा उपलब्ध नहीं है कि सामने आकर रास्ता दिखाएँ। ज्यादातर जा चुके हैं। हमें ही अपने हर व्यवहार पर राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देकर स्वयं को बदलना होगा।

दिल्ली

- ९८११०२७२०८

जी-राम जी योजना‘ का राष्ट्रीय शुभारंभ

शुरू हुई मनरेगा में सिर्फ १०० दिन रोज़गार की गारंटी दी जाती थी। उन्होंने कहा कि आज प्रधानमंत्री श्री मोदी की नई रणनीति के तहत विकसित भारत- जी राम जी योजना में मजदूरों के लिए पूरे १२५ दिन तक काम की पक्की गारंटी दी जा रही है। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ दिनों की बढ़ोतरी नहीं, बल्कि सोच में बदलाव है, अब लक्ष्य यह है कि कोई हाथ खाली न रहे। उन्होंने गर्व के साथ बताया कि नई योजना के लागू होते ही पहले दिन ही देशभर में लाखों मजदूरों को काम मिला है और मनरेगा को बेहतर स्वरूप में बदलकर वीबी- जी राम जी के रूप में लागू किया जा रहा है।

पहले ही साल में १.५१ लाख करोड़ रु. का प्रावधान, ५ साल में ७.५ लाख करोड़ रु. का लक्ष्य
केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने योजना के वित्तीय पक्ष पर विस्तार से बात करते हुए कहा कि विकसित भारत- जी राम जी योजना के पहले ही वर्ष में केंद्र सरकार की हिस्सेदारी ९५,००० करोड़ रु. से अधिक रहेगी और राज्यों की ४०% हिस्सेदारी जोड़कर यह वार्षिक व्यय १.५१ लाख करोड़ रु. के आसपास पहुँचता है। श्री शिवराज सिंह ने बताया कि अगले ५ साल में इस योजना के तहत कुल ७.५ लाख करोड़ रु. खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है। यह मन देश की २.८६ लाख पंचायतों तक पहुँचकर हर पंचायत को प्रति वर्ष औसतन २ करोड़ रु. से ज्यादा की राशि देगा जिससे गाँवों में रोजगार भी बढ़ेगा और स्थायी परिसंपत्तियाँ भी बनेंगी।

रोज़गार की कानूनी गारंटी- १५ दिन में काम, वर्ना बेरोज़गारी भत्ता

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि विकसित भारत- जी राम जी योजना में मजदूरों के अधिकारों को कानूनी ताकत दी गई है। किसी भी मजदूर द्वारा काम माँगने पर १५ दिन के भीतर उसे रोज़गार देना अनिवार्य होगा और यदि निर्धारित समय में काम नहीं दिया गया तो संबंधित मजदूर को बेरोजगारी भत्ता देना पड़ेगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि अब मजदूर के पसीने से कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता। मजदूरी देने में देरी होने की पुरानी समस्या को खत्म करने के लिए योजना में यह प्रावधान किया गया है कि देर से मजदूरी देने पर मजदूर को ब्याज समेत वित्तिात मजदूरी दी जाएगी। यह सब इसलिए कि मजदूरों के पसीने की पूरी कमान मिले और गरीबों की सेवा को ही भगवान की पूजा मानने वाला ऋमोदी मंत्रङ्ग ज़मीन पर दिखाई दे।

सिस्टम मजबूत करने के लिए ९% प्रशासनिक व्यय, मैदानी कर्मचारियों को पूरा वेतन
केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह ने बताया कि योजना के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रशासनिक व्यय को ६% से बढ़ाकर ९% कर दिया गया है। इसके तहत लगभग १३,००० करोड़ रु. से ज्यादा की राशि ग्राम रोजगार सहायकों, मैट्स और अन्य ज़मीनी कर्मचारियों के वेतन और सुविधा के लिए रखी गई है। उन्होंने कहा कि जो कर्मचारी गाँवों में मजदूरों और विकास के कामों को संभालेंगे, उन्हें समय पर पूरा वेतन मिलना ज़रूरी है ताकि वे भटकने से बचें और सिस्टम मजबूत रहे। इस तरह यह योजना मजदूरों के साथ-साथ प्रशासनिक ढाँचे को भी सुदृढ़ करने का काम करेगी।

जान्हवी कपूर ने अपनी मेहंदी के जरिए बरसाया प्यार

शशि वर्मा की अगली फ़िल्म में अली फ़ज़ल और ऋचा चड्ढा साथ नज़र आएँगे

मुंबई : शिखर पहाड़िया के साथ लंबे समय से रिलेशनशिप में रही जान्हवी कपूर ने एक बार फिर उनके लिए एक प्यारा और रोमांटिक इशारा करके सबका दिल जीत लिया है। एक्ट्रेस हाल ही में अपनी बहन अंशुला कपूर की शादी के कार्यक्रमों में शामिल हुईं और वहां की कई शानदार तस्वीरें शेयर कीं।

रिसेप्शन के लिए जान्हवी ने मनीष मल्होत्रा का खास डिजाइन किया हुआ आउटफिट पहना था, जिसमें वह बेहद खूबसूरत लग रही थीं। जहां फैंस उनके लुक की तारीफ करते नहीं थक रहे थे, वहीं एक तस्वीर में दिखी एक छोटी सी चीज़ ने सबका ध्यान खींच लिया। अपने हाथ की एक तस्वीर में एक्ट्रेस ने अपनी मेहंदी दिखाई, जिस पर हिंदी में 'शिखू' (शिखर का निकनैम) लिखा हुआ था।

काफ़ी समय से जान्हवी और शिखर के डेटिंग की चर्चा है। हालाँकि इस कपल ने कभी भी अपने रिश्ते को ऑफिशियल तौर पर कन्फ़र्म नहीं किया है, लेकिन वे एक-दूसरे के लिए अपना प्यार ज़ाहिर करने से कभी पीछे नहीं हटे। पिछले कुछ सालों में, उन्हें फ़ेमिली गेट-टुगेदर, मंदिर जाने, छुट्टियों और इंडस्ट्री के इवेंट्स में एक साथ देखा गया है।

जान्हवी ने शिखर के लिए कई प्यारे पब्लिक जेस्चर भी दिखाए हैं। पिछले साल, उन्होंने शिखर की फ़ोटो वाली कस्टमाइज़्ड टी-शर्ट पहनकर सबका ध्यान खींचा था। उससे पहले, उन्हें "Shiku" (शिकु) लिखा हुआ डायमंड नेकलेस पहने देखा गया था, जिससे उन्होंने इशारों-इशारों में अपने रिश्ते को माना था।

एक पुराने इंटरव्यू में, जान्हवी ने अपने बॉन्ड के बारे में बात करते हुए बताया था कि शिखर तब से उनकी ज़िंदगी का हिस्सा हैं जब वह टीनएजर थीं। उन्हें अपना सपोर्ट सिस्टम बताते हुए उन्होंने कहा कि वे "लगभग एक-दूसरे के साथ ही बड़े हुए हैं" और उन्होंने हमेशा एक-दूसरे के सपनों को साझा किया है।

अब अपनी लैटेस्ट पोस्ट से, एक्ट्रेस ने एक बार फिर अपने फ़ैन्स के मन में अपने रिलेशनशिप स्टेटस



जान्हवी कपूर

को लेकर उत्सुकता जगा दी है। वहीं, काम की बात करें तो जान्हवी कपूर को आखिरी बार राम चरण के साथ फिल्म 'पेदी' में देखा गया था। वह 'लग जा गले' में लीड रोल में नज़र आएंगी, जिसके अगले साल रिलीज़ होने की खबर है।

मुंबई : कई सालों तक 'फुकरे' फ़रैचाइज़ी में साथ काम करने के बाद, अली फ़ज़ल और ऋचा चड्ढा अब पहली बार एक साथ स्क्रीन पर नज़र आएंगे। यह एक बिना नाम वाली सिचुएशनल कॉमेडी फ़िल्म होगी, जिसे सीनवर्क प्रोडक्शंस और गिरिराज प्रोडक्शंस बना रहे हैं। फ़िल्म में उनके साथ जाने-माने एक्टर कुमुद मिश्रा भी होंगे।

दिल्ली के रंग-बिरंगे और हलचल भरे माहौल पर आधारित इस फ़िल्म को मशहूर एक्टर-राइटर-डायरेक्टर शशि वर्मा डायरेक्ट करेंगे। शशि वर्मा ने 'बाता', 'गुंजन सक्सेना' और 'कटहल' जैसी फ़िल्मों में एक्टिंग की है, और 'AK४७' व 'मूर्गा ट्रॉफ़ी' जैसी फ़िल्मों के लिए राइटिंग और डायरेक्शन का काम किया है।

अली फ़ज़ल और ऋचा चड्ढा
वर्मा ऐसी कहानियाँ बनाने के लिए जाने जाते हैं जिनमें ह्यूमर और इमोशन का बेहतरीन तालमेल होता है और जो ज़िंदगी की असल झलक दिखाती हैं। अब वे अपनी इसी खास शैली के साथ एक कॉमेडी फ़िल्म लेकर आ रहे हैं, जिसमें अपनापन, मज़ाक-मस्ती और ऐसे किरदार होंगे जिनसे लोग जुड़ाव महसूस करेंगे, साथ ही इसमें सामाजिक मुद्दों पर भी बात होगी। बिना नाम वाली यह फ़िल्म २०२६ के आखिर में शुरू होगी और अप्रैल २०२७ में सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी।



हालांकि अली फ़ज़ल और ऋचा चड्ढा पहले 'फुकरे' फ़िल्मों में साथ काम कर चुके हैं, लेकिन दर्शकों ने उन्हें कभी ऐसी कहानी में साथ नहीं देखा जो पूरी तरह से उनकी पर केंद्रित हो। इस नई, किरदार-प्रधान कॉमेडी फ़िल्म में उनका साथ आना पहली बार हो रहा है और उम्मीद है कि यह फ़िल्म की सबसे बड़ी ख़ासियतों में से एक होगी।

इस प्रोजेक्ट के बारे में बात

करते हुए अली फ़ज़ल ने कहा, "मेरा हमेशा से मानना रहा है कि सबसे अच्छी कॉमेडी ईमानदार किरदारों और असल लगने वाली स्थितियों से बनती है। जैसे ही मैंने यह स्क्रिप्ट पढ़ी, मुझे पता चल गया कि इसमें कुछ खास है। ऋचा के साथ स्क्रीन पर एक बिल्कुल नया तालमेल आजमाना भी रोमांचक है, और मैं सच में उस चीज़ का इंतज़ार कर रहा हूँ जो हम साथ मिलकर बनाएंगे। शशि सर के काम को मैं हमेशा से फ़ॉलो करता रहा हूँ और

उनके साथ काम करना चाहता था, और यही इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने का एक बड़ा कारण भी है।" ऋचा चड्ढा ने कहा, "जिस चीज़ ने मुझे आकर्षित किया, वह थी लेखन की सादगी और असलियत। यह मज़ेदार और इमोशनल है, और रोज़मर्रा की ज़िंदगी से गहराई से जुड़ी है, साथ ही कहानी में सामाजिक संदेश का भी एक बेहतरीन पहलू है। अली और मैंने पहले भी साथ काम किया है, लेकिन कभी इस तरह से नहीं,

और मैं सच में उत्साहित हूँ कि दर्शक हमें एक बिल्कुल नए अंदाज़ में साथ देखेंगे। कहानी ने मुझे दिल्ली के यमुना पार में बिताए अपने स्कूल के शुरुआती दिनों की याद दिला दी और मैं अली के साथ स्क्रीन शेयर करने के लिए बहुत उत्साहित हूँ। वह एक बेहतरीन कलाकार हैं। हमें पहले कभी इस तरह साथ काम करने का मौका नहीं मिला। इससे पहले हमने 'फुकरे' में काम किया था, जिसमें हमारे किरदार एक-दूसरे के विरोधी थे।"

डायरेक्टर शशि वर्मा ने कहा, "यह कहानी लोगों, रिश्तों, समाज के नज़रिए और उस उथल-पुथल का ज़र्र मनाती है जो एक छोटा सा पल किसी की ज़िंदगी में ला सकता है और सब कुछ उलट-पुलट कर सकता है। दिल्ली खुद इस फ़िल्म में एक किरदार की तरह है। अली, ऋचा और कुमुद जैसे कलाकारों के होने से हमारे बनाए गए संसार में ज़बरदस्त गहराई, सहजता और भावना आती है, और मैं श्रुटिंग शुरू करने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा हूँ।"

यह घोषणा सीनवर्क प्रोडक्शंस और गिरिराज प्रोडक्शंस की बच्चों की स्पोर्ट्स फ़िल्म 'मूर्गा ट्रॉफ़ी' के सफल समापन के बाद की गई है, क्योंकि ये बैनर अलग-अलग तरह की कहानियों के साथ अपनी फ़िल्मों की लिस्ट का विस्तार कर रहे हैं।

हुमा कुरैशी ने बॉलीवुड में महिलाओं को 'हाइपर-सेक्शुअलाइज़्ड' महिला हत्यारे के तौर पर दिखाए जाने के चलन को चुनौती दी है।

मुंबई : हुमा कुरैशी की हालिया रिलीज़ फिल्म 'बेबी डू डाई डू' के साथ बॉलीवुड में एक्शन जॉनर को एक नया नज़रिया मिल रहा है। फ़िल्म के सिनेमाघरों में चलने के साथ ही, हुमा ने इस बात पर एक ज़रूरी चर्चा शुरू कर दी है कि भारतीय सिनेमा में महिला हत्यारों (assassins) को पारंपरिक रूप से कैसे दिखाया जाता रहा है। पारंपरिक और बहुत ज़्यादा ग़ैरमसर तरीकों से हटकर, उन्होंने मज़बूत भूमिकाओं में महिलाओं के ज़्यादा असल और कई परतों वाले चित्रण की वकालत की है।

नविकेत सामंत के निर्देशन में बनी 'बेबी डू डाई डू' में हुमा ने 'बेबी' का किरदार निभाया है, जो एक मूक-बधिर हत्यारी है। यह फ़िल्म हुमा और उनके भाई साकिब सलीम की कंपनी 'सलीम सिब्लिंग्स' की पहली प्रोडक्शन फ़िल्म है। इसमें अभिनेत्री भारत की पहली ऑन-स्क्रीन महिला हिटवुमन के तौर पर नज़र आती हैं। सिल्वर स्क्रीन पर अक्सर दिखने वाले आम किरदारोंजो अक्सर शरीर से चिपके कपड़ों और बहुत ज़्यादा स्टाइल वाले लुक से पहचाने जाते हैंके उलट, 'बेबी' के किरदार को एक आम और लोगों से जुड़ी हुई इंसान की तरह दिखाया गया है।

इन घिसे-पिटे किरदारों से अलग हटकर कुछ नया करने के फैसले पर बात करते हुए, हुमा ने एक ऐसे किरदार

की ख़ासियत बताई जो आम लोगों के बीच आसानी से घुल-मिल जाता



है। PTI को दिए एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा, "वह दिखने में बिल्कुल आम और साधारण है, फिर भी एक खतरनाक कातिल है - यही बात इस कहानी को दिलचस्प बनाती है... हम बस एक ऐसा किरदार बनाना चाहते थे जिससे लोग खुद को जोड़ सकें। 'बेबी' ऐसी लड़की है जिससे आप मुंबई लोकल ट्रेन में मिल सकते हैं और आपको पता भी नहीं चलेगा कि वह क्या है।"

हुमा ने इस बात पर भी चर्चा की कि इंडस्ट्री में महिला एक्शन स्टार्स को किस तरह दिखाया जाता है। उन्होंने कहा कि महिला कातिलों को ग़ैरमसर और सेक्स-सिंबल के तौर पर दिखाने का चलन पितृसत्तात्मक सोच का नतीजा है। उन्होंने कहा, "कातिल बनने के लिए महिलाओं को टाइट कपड़े पहनने और बहुत ज़्यादा सेक्सी दिखने की ज़रूरत होती है। मुझे लगता है कि यह पितृसत्तात्मक सोच की वजह से है।"

हुमा ने बताया कि उन्हें लगता है कि तरक्की के लिए कहानी कहने के तरीके में बदलाव ज़रूरी है। हालांकि उन्होंने माना कि इंडस्ट्री में कुछ सुधार हो रहा है, लेकिन उन्हें उम्मीद है कि 'बेबी' के तौर पर उनका किरदार फ़िल्ममेकर्स को महिलाओं के लिए कुछ अलग और जटिल किरदार लिखने के लिए प्रेरित करेगा। उन्होंने आगे कहा, "मुझे लगता है कि बेहतर किरदार लिखने के मामले में अभी और भी बहुत कुछ बदला जा सकता है। यह निश्चित रूप से सही दिशा में उठाया गया एक कदम है।"

‘अल्फा’ देखने को बेताब सनी देओल

मुंबई : बॉलीवुड के 'ही-मैन' धर्मेन्द्र के दोनों बेटों सनी देओल और बाँबी देओल के बीच का प्यार किसी से छिपा नहीं है। रील लाइफ से लेकर रीयल लाइफ तक, दोनों भाई अक्सर एक-दूसरे पर जान छिड़कते नज़र आते हैं। अब जब बाँबी देओल की मच-अवेटेड स्पाई थ्रिलर फिल्म 'अल्फा' सिनेमाघरों में दस्तक दे चुकी है, तो बड़े भाई सनी देओल ने इस खास मौके पर अपने छोटे भाई को खास अंदाज़ में शुभकामनाएं दी हैं। सनी देओल ने सोशल मीडिया पर फिल्म का एक पोस्टर शेयर करते हुए बाँबी देओल के प्रति अपना समर्थन और प्यार जताया है, जिसे देखकर फैंस भी इस जोड़ी की तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। सनी देओल ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर 'अल्फा' का दमदार पोस्टर शेयर किया। इसके साथ ही उन्होंने कैप्शन में लिखा, "ऑल द बेस्ट बॉब. इसे देखने का बेसब्री से इंतज़ार है." बड़े भाई की इस प्यार भरी पोस्ट पर रिएक्शन देने में बाँबी देओल ने भी देर नहीं की। उन्होंने इस पोस्ट पर अपनापन दिखाते हुए कमेंट सेक्शन में ढेर सारे दिलवाले इमोजी बनाए। देओल भाइयों का यह आपसी तालमेल हमेशा से ही सोशल मीडिया पर उनके फैंस का दिल जीतता आया है।

आलिया की ट्रोलिंग पर बोले पिता,

शोहरत की कीमत होती है

मुंबई : पांच दशकों से ज़्यादा लंबे करियर वाले फिल्ममेकर महेश भट्ट हमेशा अपनी बेहतरीन फिल्म-मेकिंग और बेबाक राय के लिए जाने जाते रहे हैं। अब उन्होंने बड़े हों चुके बच्चों की परवरिश के बारे में अपनी राय रखी है, खासकर उस दौर में जब उनकी बेटी आलिया भट्ट को सोशल मीडिया पर नफरत का सामना करना पड़ रहा है। हिंदुस्तान टाइम्स के साथ हाल ही में हुई बातचीत में महेश भट्ट ने कहा, "मैं अपने बच्चों को कभी सलाह नहीं देता। वे मुझसे ज़्यादा समझदार हैं। वे आज के दौर के हैं। वे खुद सीखेंगे। ज़िंदगी उन्हें सिखाएगी और वही एकमात्र टीचर है।"

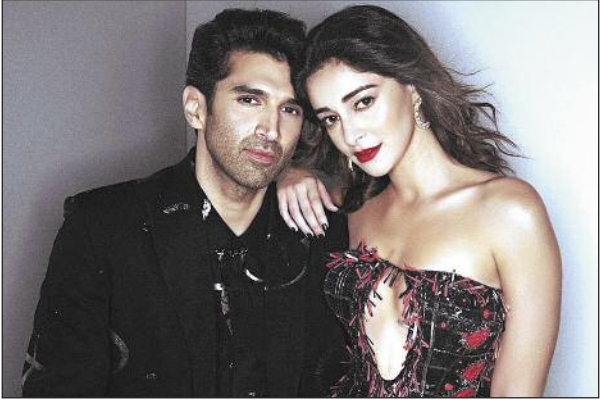
जिंदगी ही एकमात्र टीचर है, बस।" जब उनसे एक पिता के तौर पर बच्चों को प्रोटेक्ट करने की भावना के बारे में पूछा गया, तो डायरेक्टर ने बच्चों को पब्लिक की नज़र का सामना खुद करने देने की अहमियत बताई। उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि प्रोटेक्शन उन्हें कमजोर बना देगा। नहीं, उन्हें रोशनी का एक्सपीरियंस करने दो, वैसे ही जलने दो जैसे हम सब जलते हैं।" भट्ट एक्टर्स पर होने वाली कड़ी पब्लिक स्कूटनी को काम का एक हिस्सा मानते हैं। उन्होंने समझाया, "शोहरत की एक कीमत होती है। अगर आप धूप में खड़े होंगे, तो सनबर्न होगा ही।"

अब आदित्य रॉय कपूर 'आशिक' बनकर मचाएंगे धमाल

नई दिल्ली : लंदन ड्रीम्स, एक्शन रीझे और गुजरािश जैसी फिल्मों में काम कर चुके आदित्य रॉय कपूर (Aditya Roy Kapur) को उनका बड़ा ब्रेक आशिकी २ (Aashiqui २) से मिला। मोहित सूरि की इस फिल्म ने अभिनेता की किस्मत रातोंरात चमका दी थी।

आदित्य रॉय कपूर रॉहुल जयकर बनकर लाखों फैंस के दिलों पर राज करने लगे। यह फिल्म सुपर-डुपर हिट रही। गाने सदाबहार बन गए। इस फिल्म ने उन्हें स्टारडम दिलाया। इसके बाद अभिनेता ने ये जवानी है दीवानी में सपोर्टिंग रोल किया। यह भी हिट रही।

रोमांटिक फिल्म से करेंगे वापसी
मगर पिछले १३ सालों में आशिकी २ को छोड़कर आदित्य रॉय कपूर ने एक भी सोलो हिट नहीं दी। बैक-टू-बैक फ्लॉप फिल्मों की झड़ी लगाने वाले आदित्य रॉय कपूर अब एक रोमांटिक फिल्म के जरिए कमबैक करने वाले हैं। अभिनेता को एक बड़ी फिल्म मिली



है जिसमें वह एक बार फिर इंटेस कैरेक्टर में वापसी करेंगे। बॉलीवुड हंगामा के मुताबिक, आदित्य रॉय कपूर ने डायरेक्टर मिलाप मिलन जावेरी के साथ अपकमिंग फिल्म के लिए हाथ बढ़ाया है जिसे भूषण कुमार टी-सीरीज के बैनर तले प्रोड्यूस कर रहे हैं। फिल्म को लेकर डायरेक्टर ने कहा- आदित्य में हमेशा से ही ईमानदारी और गहरी भावनाओं के साथ प्यार को दिखाने की एक खास काबिलियत रही है। आशिकी

आदित्य और तारा कर रहे हैं डेट

जहां आदित्य रॉय कपूर और तारा सुतारिया को पहले उनकी आने वाली एक्शन फिल्म 'ओम' के जरिए एक-दूसरे से जोड़ा जा रहा था, वहीं अब यह कहानी एक रोमांटिक मोड़ ले चुकी है। फिल्मफेयर की रिपोर्ट्स के मुताबिक ये दोनों अब आधिकारिक तौर पर एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं।

जब फिल्मफेअर ने कथित तौर पर इस बात की पुष्टि की कि आदित्य और तारा B-town के नए कपल हैं, तो अफवाहें अपने चरम पर पहुंच गईं। जब इस जोड़ी को इंडस्ट्री के अलग-अलग इवेंट्स और प्राइवेट पार्टियों में एक साथ देखा गया, तो फैंस को पहले से ही शक होने लगा था। उनकी केमिस्ट्री, जिसे पहली बार 'ओम' की वर्कशॉप के दौरान नोटिस किया गया था, अब एक गहरे रिश्ते में बदलती नज़र आ रही है। हालांकि दोनों ही एक्टर्स अपनी पर्सनल लाइफ को प्राइवेट रखने के लिए जाने जाते हैं।

सालगिरह से पहले मिला तलाक का नोटिस : सेलिना

बॉलीवुड एक्ट्रेस सेलिना जेटली ने अपनी शादीशुदा ज़िंदगी और तलाक की प्रक्रिया को लेकर कई हैरान करने वाले और बेहद इमोशनल खुलासे किए हैं। हाल ही में 'इंडिया टुडे' को दिए एक एक्सक्लूसिव इंटरव्यू में ४४ वर्षीय सेलिना ने बताया कि कैसे उनकी शादी की १५वीं सालगिरह से ठीक पहले ऑस्टिया में उन्हें पति की तरफ से तलाक का नोटिस थमाया गया था। सबसे ज़्यादा झकझोर देने वाली बात यह थी कि जर्मन भाषा में लिखे इस कानूनी दस्तावेज़ को खुद उनके जुड़वां बेटों ने उन्हें पढ़कर सुनाया था, क्योंकि वह उस वक्त खुद उसका अनुवाद करने की स्थिति में नहीं थीं। सेलिना ने अपनी आपबीती सुनाते हुए बताया कि शुरुआत में उन्हें लगा कि यह लेटर मयुनिसिपैलिटी का कोई सामान्य कागज़ है, लेकिन जब सच सामने आया तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। उन्होंने बताया कि शादी की सालगिरह के तोहफे के बहाने दिए गए उस नोटिस में उन पर आरोप लगाए गए थे और कहा गया था कि उनकी शादी पूरी तरह से टूट चुकी है।



स्वीस स्वबरे

लोग तय करेंगे कि मैं रील्स स्टार हूं या रियल स्टार, कोस्टल रोड वीडियो पर ट्रोलिंग के बाद बोर्ली रितु तावड़े

मुंबई : बुध-मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) की मेयर रितु तावड़े ने मुंबई में पिछले हफ्ते बारिश और समुद्र हाई टाइड के बीच कोस्टल रोड के वीडियो पर ट्रोल किए जाने पर चुप्पी तोड़ी है। मेयर रितु तावड़े ने कहा है कि वह समुद्र में ऊंची लहरों के उठने के अलर्ट के वह कोस्टल रोड के विजिट पर गई थीं। यह कदम मुंबई के लोगों के प्रति उनकी जिम्मेदारी का हिस्सा था और साफ किया कि वह 'रील्स स्टार' बनने के लिए वहां नहीं गई थीं। गौरतलब हो कि कोस्टल रोड के विजिट में मेयर रितु तावड़े ने वहां रेलिंग पर बैठे एक कपल को हटाया था। इसका वीडियो सामने आने के बाद उन्हें ट्रोल किया जा रहा था। खुद आदित्य ठाकरे ने हमला बोला था।

कोस्टल रोड के वीडियो पर बोर्ली रितु तावड़े

अब मुंबई में बारिश थमने और हालात सामान्य होने के बाद रितु तावड़े ने ट्रोल करने वाले लोगों को जवाब देते हुए कहा है कि मुंबई के लोग तय करेंगे कि मैं रील्स स्टार हूं या रियल स्टार। मुंबई की मेयर रितु तावड़े ने अपना बचाव करते हुए कहा कि उनके काम के पीछे लोगों की सुरक्षा की चिंता थी, न कि पब्लिसिटी। रितु तावड़े ने इस पूरे मुद्दे पर बोलते हुए कहा है कि मुझे इस बात पर ट्रोल किया गया कि मेयर कोस्टल रोड पर क्या कर रही थीं। मैं कोस्टल रोड पर इसलिए गई क्योंकि मैंने छोटे बच्चों को रेलिंग के किनारे बैठे देखा। समुद्र की लहरें इतनी ऊंची थीं कि वे उन बच्चों को बहा ले जा सकती थीं। इसीलिए मैं वहां नीचे गई। रितु तावड़े ने कहा कि मुंबई की मेयर और मुंबई की एक सेवक के तौर पर मैं अपने साथी मुंबईकरों के लिए वहां गई थीं। मैं वहां कोई 'रील्स स्टार' बनने नहीं गई थी। इसीलिए मैंने कहा कि मुंबईकर ही तय करेंगे कि मैं 'रील्स स्टार' हूं या 'रियल स्टार'। यह तय करने का हक किसी और को नहीं है।

मैं जमीनी स्तर की कार्यकर्ता हूं...

रितु तावड़े ने अपने राजनीतिक सफर का जिक्र करते हुए कहा है कि शहर के सबसे ऊंचे नागरिक पद पर होने के बावजूद भी मैं खुद को जमीनी स्तर की कार्यकर्ता ही मानती हूं। तावड़े ने कहा कि मैं लगातार काम करते हुए मैं कॉरपोरेटर बनी और वहां से मेयर के तौर पर सेवा करने के मुकाम तक पहुंची। मेरे अंदर का कार्यकर्ता हमेशा बाहर आएगा क्योंकि मैं हमेशा जन-आंदोलनों और सड़कों पर उतरकर काम किया है। जो लोग मुझे जानते हैं, वे सब यह बात जानते हैं। रितु तावड़े ने अपने राजनीतिक सफर की शुरुआत कांग्रेस पार्टी से की थी, लेकिन साल २०१२ में वह भाजपा में शामिल हो गईं। वह घाटकोपर क्षेत्र से लगातार तीन बार अलग-अलग वार्डों से नगर निगम पार्षद (कॉर्पोरेटर) चुनी जा चुकी हैं। उन्होंने पहली बार २०१२ (वार्ड १२७), दूसरी बार २०१७ (वार्ड १२१) और तीसरी बार २०२५ के बीएमसी चुनाव (वार्ड १३२) में शानदार जीत हासिल की।

महाराष्ट्र ATS की रडार पर पाकिस्तानी गैंगस्टर शहजाद भट्टी से जुड़े गतिविधियों की जांच जारी

मुंबई: महाराष्ट्र एंटी-टेररिज्म स्क्वाड (ATS) ने पाकिस्तानी गैंगस्टर शहजाद भट्टी से जुड़े संदिग्ध लोगों के खिलाफ राज्यभर में बड़े स्तर पर जांच अभियान शुरू किया है। एजेंसी के अनुसार, शुरुआती जांच में ऐसे संकेत मिले हैं कि भट्टी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए भारतीय युवाओं तक पहुंच बनाकर उन्हें देश-विरोधी गतिविधियों के लिए प्रभावित करने और अपने नेटवर्क से जोड़ने की कोशिश कर रहा है। इसी इनपुट के आधार पर एटीएस ने १०२ ऐसे लोगों को चिन्हित किया है, जिनकी गतिविधियां जांच के दायरे में हैं। एटीएसी ने यह भी आशंका जताई है कि आर्थिक रूप से कमजोर और बेरोजगार युवाओं को आसान कमाई का लालच देकर अपने जाल में फंसाने की कोशिश की जाती है। एजेंसी इस बात की भी जांच कर रही है कि कहीं इन लोगों का इस्तेमाल स्थानीय स्तर पर 'स्लीपर सेल' तैयार करने, संवेदनशील सूचनाएं जुटाने, मादक पदार्थों की तस्करी या अवैध हथियारों की आवाजाही जैसी गतिविधियों के लिए तो नहीं किया जा रहा।

५८ टीमें शामिल की गईं

एटीएस के इस विशेष अभियान में महाराष्ट्र की १४ क्षेत्रीय यूनिटों की ५८ टीमें शामिल की गई हैं। अधिकारी इन संदिग्ध लोगों के ठिकानों, संपर्कों और ऑनलाइन गतिविधियों की जांच कर रहे हैं। एजेंसी का कहना है कि जांच का उद्देश्य किसी भी संभावित देश-विरोधी नेटवर्क का समय रहते पता लगाना और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बनने वाली गतिविधियों को रोकना है।

भारतीय युवाओं को ऐसा जाल में फंसा रहे

जांच एजेंसियों के मुताबिक, शहजाद भट्टी के साथ आबिद जाट उर्फ आबिद छाल, अजमल गुर्जर, हम्माय मेमन, राणा हुनैन और अशरफ बशीर आलम जैसे सहयोगियों के नाम भी सामने आए हैं। आरोप है कि यह पूरा नेटवर्क फेसबुक, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम और व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर भारतीय युवाओं से संपर्क स्थापित करता है। इसके बाद सामाजिक और धार्मिक मुद्दों से जुड़े भड़काऊ कंटेंट के जरिए उन्हें प्रभावित करने और कट्टरपंथ की ओर धकेलने का प्रयास किया जाता है।

बिजली चोरी की जांच करने पहुंची टीम पर हमला

बांदा : बांदा में सरकारी कर्मचारियों पर हमले का सनसनीखेज मामला सामने आया है. यहां बिजली चोरी के मामले की जांच करने पहुंची बिजली विभाग की टीम पर दबंगों ने कथित तौर पर जानलेवा हमला कर दिया. आरोप है कि टीम के जूनियर इंजीनियर (JE) और कर्मचारियों को बंधक बनाकर गेट बंद कर दिया गया, फिर ईंट-पत्थरों, चूंसों और लातों से बेरहमी से पीटा गया. इस दौरान सरकारी काम में भी बाधा डाली गई. बताया जा रहा है कि सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और काफी मशक्कत के बाद बिजली विभाग की टीम को आरोपियों के कब्जे से बाहर निकाला. इस घटना में बिजली विभाग के दो जूनियर इंजीनियर और एक कर्मचारी घायल हुए हैं, जबकि टीम के तीन अन्य सदस्य सुरक्षित बच गए. घटना का वीडियो भी सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है.

पुलिस ने मौके से कई लोगों को हिरासत में लिया है. पीड़ित अधिकारियों की तहरीर के आधार पर गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी गई है. घटना के बाद सरकारी कर्मचारियों की सुरक्षा को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो गए हैं.

चेंबूर हादसे में बड़ा खुलासा

मुंबई : मुंबई के चेंबूर में ३० जून को हुए दर्दनाक पेड़ हादसे की जांच रिपोर्ट में बड़ा खुलासा हुआ है. रिपोर्ट के मुताबिक, ११ साल के विहान श्रीवास्तव की मौत का सबसे बड़ा कारण पेड़ की जड़ों के आसपास किया गया कंक्रीटीकरण और सीसी सड़क का निर्माण था. जांच समिति ने साफ कहा है कि जड़ों तक न तो पर्याप्त पानी पहुंच रहा था और न ही मिट्टी से ज़रूरी पोषण मिल पा रहा था. इसी वजह से करीब ६० से ७० साल पुराना पीपल का पेड़ धीरे-धीरे कमजोर होता गया और भारी बारिश के दौरान जड़ समेत उखड़कर स्कूल बस पर गिर पड़ा.

इस हादसे के तुरंत बाद बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) आयुक्त अश्विनी भिडे ने मामले की जांच के लिए दो सदस्यीय समिति का गठन किया था. समिति में उप आयुक्त (विशेष अभियांत्रिकी) पुरुषोत्तम मालवदे और उप आयुक्त (आभियांत्रिकी) शशांक भोरे को शामिल किया गया. दोनों अधिकारियों को ८ दिनों के भीतर विस्तृत रिपोर्ट देने और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के सुझाव देने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी.

३० जून की दोपहर करीब ढाई बजे चेंबूर पश्चिम स्थित डायमंड गार्डन के पास यूनिवर्सल हाई स्कूल की बस गुजर रही थी. बस में १३ बच्चे सवार थे. तभी सड़क किनारे

सीसी सड़क और कंक्रीटीकरण के चलते गई मासूम की जान



खड़ा विशाल पीपल का पेड़ अचानक जड़ समेत उखड़कर बस पर गिर पड़ा. हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई.

मुंबई फायर ब्रिगेड, बस स्टाफ और स्थानीय लोगों ने मिलकर राहत एवं बचाव अभियान चलाया और सभी बच्चों को बस से बाहर निकाला. हादसे में कई बच्चे घायल हुए, जबकि गंभीर रूप से घायल ११ वर्षीय विहान श्रीवास्तव ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया.

रिपोर्ट में क्या-क्या आया सामने
जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि पेड़ बाहर से पूरी तरह सामान्य और स्वस्थ दिखाई दे रहा था. यही वजह थी कि सामान्य निरीक्षण में कोई खतरा नजर नहीं

आया. लेकिन पेड़ की जड़ों के चारों ओर बड़े पैमाने पर कंक्रीट बिछा दिया गया था. इससे बारिश का पानी और मिट्टी में मौजूद पोषक तत्व जड़ों तक नहीं पहुंच पा रहे थे. लंबे समय तक ऐसा होने से जड़ें कमजोर हो गईं. भारी बारिश और तेज हवा का दबाव पड़ने पर पेड़ खुद को संभाल नहीं पाया और जड़ समेत गिर गया.

समिति ने साफ सिफारिश की है कि शहर में किसी भी पेड़ की जड़ों के आसपास कंक्रीटीकरण नहीं किया जाना चाहिए. जहां पहले से कंक्रीट डाला गया है, वहां वैज्ञानिक तरीके से उसे हटाया जाए ताकि जड़ों तक मिट्टी और पानी आसानी से पहुंच सके. इसके अलावा शहरी विकास से जुड़े सभी विभागों को वृक्ष संरक्षण के तय

मानकों का सख्ती से पालन करने की सलाह भी दी गई है.

३ अधिकारी निर्लंबित, ठेकेदार पर भी कार्रवाई की तैयारी
बीएमसी ने जांच रिपोर्ट के आधार पर प्रथम दृष्टया लापरवाही मानते हुए तीन अधिकारियों को निर्लंबित कर दिया है. इसके साथ ही संबंधित ठेकेदार के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई करने का फैसला लिया गया है. जांच रिपोर्ट को जल्द ही बीएमसी की विशेष सभा में पेश किया जाएगा, जहां आगे की कार्रवाई पर फैसला लिया जाएगा.

बीएमसी के रिकॉर्ड के मुताबिक, जिस पीपल के पेड़ के गिरने से हादसा हुआ उसकी उम्र करीब ६० से ७० साल थी. इस पेड़ को लेकर पहले कभी कोई आधिकारिक शिकायत दर्ज नहीं

हर साल बढ़ रहे हैं पेड़ गिरने के मामले

बीएमसी के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष २०२६ में मानसून से पहले ४६८ मृत और खतरनाक पेड़ों को हटाया गया, जबकि १,०१,३१८ पेड़ों की शाखाओं की छंटाई की गई. इसके बावजूद मुंबई में हर साल बड़ी संख्या में पेड़ गिरने की घटनाएं सामने आ रही हैं. वर्ष २०२३ में ६८७, वर्ष २०२४ में ६५३ और वर्ष २०२५ में ८५५ पेड़ गिरने के मामले दर्ज किए गए थे.

चेंबूर हादसे के बाद बीएमसी आयुक्त अश्विनी भिडे ने शहर के सभी संभावित खतरनाक पेड़ों का दोबारा सर्वे, समयबद्ध निरीक्षण और जरूरत पड़ने पर तुरंत कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं, ताकि भविष्य में ऐसी दर्दनाक घटनाओं को रोका जा सके.

हुई थी. जनवरी २०२६ में सड़क निर्माण के दौरान एहतियात बरतने के निर्देश दिए गए थे.

इसके बाद १२ मई २०२६ को पेड़ का निरीक्षण किया गया था, जिसमें बाहरी जांच के आधार पर उसे स्वस्थ और मजबूत बताया गया था. वहीं, मानसून से पहले २९ मई को उसकी नियमित छंटाई भी कराई गई थी.

महाराष्ट्र सरकार का बड़ा फैसला,

महात्मा फुले योजना में बदलाव, अब PET स्कैन भी होगा मुफ्त

महात्मा फुले जन आरोग्य योजना से जुड़ें अस्पताल

स्वास्थ्य मंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि राज्य सरकार का प्रयास है कि सभी प्रकार के धर्मादाय (वैरिटेबल) अस्पताल महात्मा फुले जन आरोग्य योजना से जुड़ें, ताकि पात्र मरीजों को अधिक से अधिक अस्पतालों में गुणवत्तापूर्ण और नि:शुल्क उपचार की सुविधा उपलब्ध कराई जा सके. नागरिकों को बेहतर सुविधा मुहैया कराने के लिए सरकार द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं. इसका लाभ सीधे महाराष्ट्र की जनता को पहुंचाने के लिए सरकार प्रयास कर रही है. सरकार के इस फैसले से नागरिकों को आसानी से योजना का लाभ मिल जाएगा. सरकार के इस कदम की लोग सराहना कर रहे हैं.

गंभीर बीमारियों के इलाज को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाना है. इसी उद्देश्य से महात्मा फुले जन आरोग्य योजना के दायरे का विस्तार किया जा रहा है, ताकि अधिक से अधिक मरीजों को आधुनिक जांच और बेहतर उपचार का लाभ मिल सके.

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों तक इस योजना का लाभ प्रभावी ढंग से पहुंचाने के लिए योजना से संबद्ध अस्पतालों के पात्रता मानदंडों में आवश्यक बदलाव किए जाएंगे. इससे ग्रामीण क्षेत्रों के मरीजों के लिए उपचार सुविधाओं तक पहुंच आसान होगी.

महाराष्ट्र में डॉन बाबा फरजान के घर छापे में मिला कैश का पहाड़, सोना, गोला-बारूद समेत हथियारों का जखीरा

छन्नपति संभाजीनगर : महाराष्ट्र के छन्नपति संभाजी नगर में मिटमिता में गैंगस्टर बाबा फरजान (उर्फ बाबा फरदुन अहंसर दोरदी) के बंगले पर छापेमारी की गई। इस दौरान पुलिस ने ५.६५ करोड़ रुपये की संपत्ति ज़ब्त की, जिसमें कैश, गहने, हथियार, गोला-बारूद और धारदार हथियार शामिल थे। इसके बाद गैंगस्टर की पत्नी होने का दावा करने वाली ४८ वर्षीय महिला को गिरफ्तार कर लिया गया। यह छापेमारी शहर की क्राइम ब्रांच और कैंटोनमेंट पुलिस ने एक गुप्त सूचना के आधार पर संयुक्त रूप से की थी।

पुलिस ने गिरफ्तार महिला की पहचान शीलाबाई बाबा फरदुन दोरदी (उर्फ शीलाबाई गणपत साल्वे) के तौर पर की है। उसे शनिवार को अदालत में पेश किया गया, जहां से उसे चार दिन की पुलिस कस्टडी में भेज दिया गया।

डॉन की ६ महीने पहले हो चुकी है मौत
यह छापेमारी डॉन की बीमारी से मौत के ठीक छह महीने बाद की

गई। अधिकारियों के अनुसार, जब क्राइम ब्रांच के अधिकारी घर पहुंचे, तो वहां फरजान की दूसरी पत्नी शीला गणपतराव साल्वे (५२) मौजूद थीं। तलाशी के दौरान, अधिकारियों को कुल ५.२६.२९.५६० रुपये का बेहिसाब कैश मिला - जिसमें १०० और २०० रुपये के नोटों के अलावा ५०, २० और १० रुपये के नोटों की बड़ी मात्रा में छोटी गड़बियां शामिल थीं। सही रकम का पता लगाने के लिए अधिकारियों को पांच नोट गिनने वाली मशीनें मंगवानी पड़ीं।

इसके अलावा, घर में २१,३४.३५० रुपये कीमत के सोने के गहने, ८.०९.२४८ रुपये कीमत की चाँदी और ३४.८३६ रुपये कीमत की अलग-अलग विदेशी और मशहूर कंपनियों की शराब की ४५ बोतलें भी मिलीं।

भारी मात्रा में हथियार मिले
पुलिस ने ५.२६ करोड़ रुपये कैश, २१.३४ लाख रुपये कीमत के १५१.३ ग्राम सोने के गहने, ८.०९ लाख रुपये कीमत के ३.१२ किलोग्राम चांदी के गहने और



सील, साथ ही एक रिवॉल्वर, दो पिस्तौल, चार राइफल, चार मैगजीन, ६३२ जिंदा कारतूस, २३ से ज्यादा धारदार हथियार, विदेशी शराब, एक DVR और हथियारों के लाइसेंस के दस्तावेज बरामद किए।

पुलिस को घर में ५,५०,००० रुपये कीमत के कई हथियार भी मिले - इनमें मैगजीन वाली दो पिस्तौल, चार राइफल, १२-बोर राइफल, दो एयर गन, एक . २२ राइफल, एक

हथियारों को अधिकारियों के पास जमा नहीं कराया गया था। पुलिस कमिश्नर प्रवीण पवार ने कहा कि यह ऑपरेशन संगठित अपराध और अवैध संपत्ति के खिलाफ शहर की पुलिस की चल रही कार्रवाई का हिस्सा था। उन्होंने कहा कि हम ज़ब्त किए गए कैश और कीमती सामान के स्रोत की गहन जांच करेंगे, हथियारों की वैधता की पुष्टि करेंगे और यह पता लगाएंगे कि

क्या यह संपत्ति किसी अपराधिक गतिविधि से जुड़ी है।

क्राइम ब्रांच के इंस्पेक्टर गजानन कल्याणकर ने कहा, "हम अब ज़ब्त किए गए कैश और कीमती सामान के स्रोत, हथियारों की वैधता और इस बात की जांच कर रहे हैं कि क्या विदेशी शराब को शराबबंदी कानूनों का उल्लंघन करके रखा गया था। हम वित्तीय रिकॉर्ड और मालिकाना हक के दस्तावेजों की भी जांच कर रहे हैं ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या ये संपत्ति आपराधिक गतिविधियों से हासिल की गई थी या किसी संगठित अपराध नेटवर्क से जुड़ी है। क्राइम ब्रांच के हेड कान्स्टेबल की शिकायत के आधार पर, कैंटोनमेंट पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता, आर्म्स एक्ट, महाराष्ट्र पुलिस एक्ट और महाराष्ट्र प्रोहिबिशन एक्ट की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस ने कहा कि आगे की कानूनी कार्रवाई चल रही जांच के नतीजों और अन्य लोगों की संभावित संलिप्तता पर निर्भर करेगी।

भारत की राष्ट्रपति मोल्दोवा के दौरे पर उन्होंने द्विपक्षीय स्तर की बातचीत का नेतृत्व किया



नई दिल्ली : भारत की राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मू आज (२० जुलाई, २०२६) की सुबह मोल्दोवा, उत्तरी मैसेडोनिया और रोमानिया की अपनी राजकीय यात्रा के पहले चरण में मोल्दोवा की राजधानी चिश्नाउ पहुंचीं। किसी भी भारतीय राष्ट्रपति की मोल्दोवा की यह पहली यात्रा है।

इस राजकीय यात्रा पर राष्ट्रपति के साथ श्रीमती निमुबेन जयंतीभाई बांभणिया, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री, डॉ. दिनेश शर्मा, राज्य सभा सांसद और श्री विजय बघेल, लोकसभा सांसद भी गए हैं।

चिश्नाउ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पहुंचने पर, राष्ट्रपति का स्वागत मोल्दोवा गणराज्य के उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री, श्री मिहाई पॉपसोई ने किया। बाद में, राष्ट्रपति प्रेसिडेन्सियल पैलेस गईं। वहां मोल्दोवा गणराज्य की राष्ट्रपति, महामहिम श्रीमती माया सैंडू ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उनका औपचारिक स्वागत किया गया और उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। आमने-सामने

की बैठक और प्रतिनिधिमंडल स्तर की बातचीत के दौरान, दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय साझेदारी के सभी पहलुओं पर सार्थक और भविष्योन्मुखी चर्चा की। राष्ट्रपति ने कहा कि यह किसी भारतीय राष्ट्रपति की मोल्दोवा की पहली राजकीय यात्रा है। यह हमारे द्विपक्षीय संबंधों में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है, और हमारे दोनों देशों के बीच बढ़ती मित्रता और आपसी विश्वास को दर्शाती है।

राष्ट्रपति ने कहा कि भारत और मोल्दोवा तीन दशकों से मधुर और मैत्रीपूर्ण संबंध साझा करते आ रहे हैं। भौगोलिक रूप से दूर होने के बावजूद, शांति, विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के प्रति हमारी साझा प्रतिबद्धता के अनुरूप हमारी साझेदारी निरंतर बढ़ती रही है।

उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि आर्थिक सहयोग हमारी साझेदारी का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। उन्होंने व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने, आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने, कनेक्टिविटी में सुधार करने तथा अपने व्यवसायी वर्गों के बीच घनिष्ठ जुड़ाव को

प्रोत्साहित करने की जरूरत पर जोर दिया।

राष्ट्रपति ने मोल्दोवा के पेशेवरों के लिए आईटीसी ट्रेनिंग स्लॉट की संख्या दोगुनी करने के भारत के निर्णय की जानकारी दी; इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अन्य उभरती हुई प्रौद्योगिकियों के विशेष पाठ्यक्रम भी शामिल हैं। उन्होंने मोल्दोवा के राजनयिकों को भारत के विदेशी सेवा संस्थान में एआई और साइबर डिप्लोमेसी पर विशेष पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।

दोनों नेता आपसी हित के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए, जिनमें कृषि, लॉजिस्टिक्स एवं इंफ्रास्ट्रक्चर, हेल्थकेयर एवं फार्मास्यूटिकल्स, नवीकरणीय ऊर्जा, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नवाचार शामिल हैं। दोनों नेता एकसमान वैश्विक चुनौतियों से निपटने और एक शांतिपूर्ण, स्थिर तथा समृद्ध विश्व-व्यवस्था के निर्माण में योगदान देने के लिए मिलकर काम करते रहने पर सहमत हुए।

मुंबई : महाराष्ट्र विधानसभा में अंतिम सप्ताह प्रस्ताव पर जवाब देते हुए मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कानून-व्यवस्था, महिला सुरक्षा, साइबर अपराध, मादक पदार्थों के खिलाफ कार्रवाई, पुलिस आधुनिकीकरण, किसानों की कर्जमाफी, बिजली बिल, स्मार्ट मीटर और अजित पवार विमान दुर्घटना जांच सहित कई अहम मुद्दों पर सरकार का पक्ष रखा. उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र अपराध के मामले में देश में पहले नहीं बल्कि सातवें स्थान पर है और राज्य सरकार अपराध सिद्धि (कन्विक्शन) की दर को वर्तमान ५२.६ फीसदी से बढ़ाकर ७० फीसदी से अधिक करने के लिए कानून में आवश्यक बदलाव कर रही है.

मुख्यमंत्री ने बताया कि महिलाओं से जुड़े अपराधों के मामले में महाराष्ट्र देश में नौवें स्थान पर है. महिलाओं के खिलाफ अपराधों की शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया आसान होने से ऐसे मामलों का पंजीकरण बढ़ा है. उन्होंने कहा कि बलात्कार के ९९ फीसदी मामलों में आरोपी पीड़िता के परिचित या रिश्तेदार होते हैं. ऐसे मामलों में ९९ फीसदी मामलों में ६० दिनों के भीतर आरोपपत्र दाखिल किए गए हैं, जबकि लैंगिक अपराधों में अब १५ दिनों के भीतर चार्जशीट दाखिल करने की व्यवस्था लागू की गई है. वर्ष २०२१ से २०२६ के बीच लापता हुई ९३ फीसदी महिलाएं अपने घर लौट चुकी हैं और अपहरण के मामले केवल ५.५ फीसदी हैं.

ई-साक्ष्य प्रणाली और बढ़ती अपराध सिद्धि दर मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि ई-साक्ष्य प्रणाली लागू होने से एक बार कई बयान बदलना मुश्किल होगा. पहले दोषारोप प

सदन में सीएम फडणवीस के ऐलान, किसानों की कर्जमाफी, पुलिस आवास और साइबर सुरक्षा पर घोषणाएं

समय पर दाखिल करने की दर करीब ५० फीसदी थी, जिसे लगातार बढ़ाया जा रहा है. उन्होंने बताया कि वर्ष २०१२ में अपराध सिद्धि दर केवल ९.४ फीसदी थी, जो अब बढ़कर ५२.६ फीसदी हो गई है.

ऑपरेशन मुस्कान और त्वरित निपटारा मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि ऑपरेशन मुस्कान के तहत अब तक ४३,५५८ बच्चों को उनके परिवारों तक सुरक्षित पहुंचाया गया है. न्यायालय और राज्य सरकार के बीच बेहतर समन्वय के कारण मामलों के शीघ्र निपटारे में सफलता मिल रही है. उन्होंने बताया कि नरसापुर मामले में केवल ५९ दिनों में फैसला आया, जिसमें आधुनिक तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग किया गया.

साइबर अपराध पर नकेल: ठगी के ४३९ करोड़ रुपये बचाए गए

साइबर अपराधों पर बोलते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि साइबर सेल को प्रतिदिन ८ से १० हजार शिकायतें प्राप्त होती हैं. पहले साइबर धोखाधड़ी की केवल ११ फीसदी राशि फ्रीज हो पाती थी, जिसे बढ़ाकर २७ फीसदी कर दिया गया है और इससे ४३९ करोड़ रुपये बचाए गए हैं. उन्होंने नागरिकों से अपील की कि किसी भी अनजान मोबाइल नंबर से आए लिंक या फाइल को डाउनलोड न करें, क्योंकि इससे बड़े साइबर अपराध हो सकते हैं. सोशल मीडिया पर आत्महत्या से जुड़े पोस्ट की निगरानी कर मनोवैज्ञानिक और मनोचिकित्सकों की मदद से लोगों को बचाने का अभियान भी चलाया जा रहा है, जिससे पिछले डेढ़ वर्ष में अनेक लोगों की जान बचाई गई है.

मादक पदार्थों (ड्रग्स) के खिलाफ महाअभियान और कड़ी कार्रवाई

जहरीली देशी शराब कांड पर मुख्यमंत्री ने कहा कि पुणे में जहरीली शराब पीने से २२ लोगों की मौत के मामले में सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है. इस मामले में २६ अधिकारियों को निलंबित किया गया है और उड़न दस्तों (फ्लाईंग स्कॉड) को भी मजबूत किया गया है.



मादक पदार्थों के खिलाफ कार्रवाई का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय तस्कर सलीम डोला को विदेश से गिरफ्तार किया गया. इस कार्रवाई में २५६ करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के मादक पदार्थ जब्त किए गए तथा कई बड़े गिरोहों का भंडाफोड़ हुआ. मामले में संलिप्त २४ पुलिसकर्मियों को निलंबित किया गया, जिनमें से १८ को सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है. ठाणे और नागपुर में एनडीपीएस मामलों के लिए विशेष अदालतें स्थापित की जा रही हैं तथा प्रत्येक संभाग में ऐसी अदालतें खोली जाएंगी. बच्चों में नशे के प्रति जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है.

पुलिस आधुनिकीकरण: नए थाने और हजारों आवास मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य में पुलिस विभाग के आधुनिकीकरण पर बड़े पैमाने पर

निवेश किया जा रहा है. ६१ नए पुलिस थानों की स्थापना की गई है. पुलिसकर्मियों के लिए ९,७६२ आवासों का निर्माण जारी है. बीडीडी चॉल में पुलिस कर्मियों को मालिकाना हक के घर दिए गए हैं. अगले सप्ताह एक समिति गठित कर पुलिस को स्वामित्व वाले घर उपलब्ध कराने के लिए रिपोर्ट तैयार की जाएगी. मुंबई में पुलिस विभाग के लिए ७४ उपयुक्त भूखंड चिन्हित किए गए हैं, जहां लगभग ४० हजार आवास और नए पुलिस थाने बनाए जाएंगे. मुख्यमंत्री ने कहा कि 'तपास सारथी' नामक नई जांच प्रणाली शुरू की गई है, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की मदद से अपराधों की जांच की जा रही है. इससे पुलिस की जांच क्षमता और गति दोनों में उल्लेखनीय सुधार होगा.

अजित पवार विमान दुर्घटना जांच

अजित पवार विमान दुर्घटना मामले पर मुख्यमंत्री ने कहा कि इस मामले की जांच सीआईडी और एआईआईबी (AAIB) दोनों एजेंसियां कर रही हैं. पायलट सुमित कपूर और विमान की सभी तकनीकी प्रणालियों की जांच में अब तक कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला है. ब्लैक बॉक्स सहित सभी तकनीकी पहलुओं की जांच पूरी हो चुकी है. अंतरिम रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है, जबकि अंतिम रिपोर्ट अगले वर्ष जनवरी तक आने की उम्मीद है. उसके बाद आवश्यकता पड़ने पर सीबीआई जांच पर भी निर्णय लिया जाएगा. उन्होंने कहा कि भावनाएं महत्वपूर्ण हैं, लेकिन कानून केवल साक्ष्यों के आधार पर काम करता है और सरकार सच्चाई सामने लाकर उचित कार्रवाई करेगी.

किसानों को बड़ी राहत किसानों के मुद्दे पर मुख्यमंत्री

ने कहा कि केवल कर्जमाफी से किसान समृद्ध नहीं बनते, लेकिन उन्हें आर्थिक मजबूती देने के लिए सरकार यह निर्णय ले रही है. उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने २५ हजार करोड़ रुपये की बिजली बिल राहत भी दी है. महात्मा फुले किसान कर्जमाफी योजना के तहत मिलने वाली ५० हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि बढ़ाकर अब २ लाख रुपये करने की घोषणा की गई है. वर्ष २०२५ तक की पात्रता संबंधी शर्त भी समाप्त कर दी गई है, जिससे अधिक किसानों को योजना का लाभ मिलेगा. उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र देश का एकमात्र राज्य है जिसने २०१७, २०२० और अब फिर से किसानों की कर्जमाफी का निर्णय लिया है. सरकार किसानों को राहत देने के साथ-साथ बैंकों की वित्तीय स्थिति को भी सुरक्षित रखने पर काम कर रही है. उन्होंने यह भी बताया कि सरकार ने ६ लाख टन सोयाबीन की खरीद की है.

स्मार्ट मीटर और बिजली बिल: खपत और गर्मी के कारण बढ़े बिल बिजली बिल और स्मार्ट मीटर को लेकर मुख्यमंत्री ने कहा कि स्मार्ट मीटर की स्थापना पूरे देश में अनिवार्य है और राज्य सरकार ने इसके उपभोक्ताओं को रियायतें भी दी हैं. इस वर्ष भीषण गर्मी, मानसून में देरी और बिजली की खपत बढ़ने के कारण बिजली बिल अधिक आए हैं. ५०० यूनिट से अधिक बिजली खपत पर अतिरिक्त शुल्क लागू होने से भी बिल बढ़े हैं. उन्होंने स्पष्ट किया कि जिन क्षेत्रों में स्मार्ट मीटर नहीं लगे हैं, वहां भी बिजली बिल में समान वृद्धि हुई है, इसलिए इसका संबंध केवल स्मार्ट मीटर से नहीं है. उन्होंने यह भी बताया कि वसई-विरार में तकनीकी कारणों से तीन दिन बिजली आपूर्ति बंद रखनी पड़ी थी.

‘काँकरोच जनता पार्टी’: लोकतंत्र का व्यंग्य या लोकतांत्रिक मर्यादाओं पर संकट ?

नई दिल्ली : भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यह केवल मतदान की व्यवस्था नहीं, बल्कि संवाद, सहमति, असहमति, संवैधानिक मर्यादाओं और सामाजिक उत्तरदायित्वों का एक सशक्त तंत्र है। लोकतंत्र की शक्ति विरोध में निहित है, लेकिन उसकी गरिमा विरोध की शैली, उद्देश्य और मर्यादा से निर्धारित होती है। हाल के दिनों में चर्चित हुई तथाकथित ‘काँकरोच जनता पार्टी’ (सीजेपी) इसी संदर्भ में गंभीर विमर्श की मांग करती है। यह आंदोलन प्रतियोगी परीक्षाओं, विशेषकर नीट परीक्षा में कथित अनियमितताओं और पेपर लीक के विरोध के नाम पर उभरा। प्रारम्भ में यह सोशल मीडिया पर व्यंग्यात्मक अभियान के रूप में सामने आया और बाद में दिल्ली के जंतर-मंतर तक पहुंच गया। इसके समर्थकों ने इसे युवाओं के आक्रोश की अभिव्यक्ति बताया, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या यह वास्तव में शिक्षा सुधार का आंदोलन है या लोकतांत्रिक असंतोष को व्यंग्य, उपहास और राजनीतिक धुंधीकरण की दिशा में मोड़ने वाला एक नया प्रयोग ?

भारतीय संविधान प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और शांतिपूर्ण विरोध का अधिकार देता है। किंतु कोई भी अधिकार निरंकुश नहीं होता। लोकतंत्र में विरोध का उद्देश्य समाधान की खोज होना चाहिए, न कि अराजकता का विस्तार। यदि विरोध का स्वर केवल उपहास, आक्रोश और टकराव तक सीमित रह जाए, तो वह लोकतंत्र को मजबूत करने के बजाय कमजोर करने लगता है। ‘काँकरोच जनता पार्टी’ का नाम ही एक नकारात्मक और व्यंग्यात्मक मानसिकता का परिचायक है। किसी राजनीतिक दल की नकल करते हुए स्वयं को ‘काँकरोच’ के प्रतीक से जोड़ना लोकतांत्रिक विमर्श को गंभीरता से अधिक तमाशे में बदलने का प्रयास प्रतीत होता है। लोकतंत्र में व्यंग्य का स्थान है, लेकिन व्यंग्य यदि विचार का स्थान ले ले, तो वह जनमत को प्रभाव भी कर सकता है।

किसी भी आंदोलन का मूल्यांकन उसकी मांगों और कार्यप्रणाली से किया जाता है। सीजेपी की प्रमुख मांगें हैं-परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता, पेपर लीक की रोकथाम, शिक्षा मंत्री का इस्तीफा तथा युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना। इनमें से अधिकांश मांगें ऐसी हैं जिन पर देश का

हर जिम्मेदार नागरिक सहमत हो सकता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या इन मांगों को मनवाने का तरीका भी उतना ही जिम्मेदार है? क्या काँकरोच के मुखौटे पहनना, राजनीतिक व्यंग्य को आंदोलन का आधार बनाना और सोशल मीडिया पर उत्तेजक अभियानों को बढ़ावा देना शिक्षा सुधार का व्यावहारिक मार्ग है? क्या इससे सरकार, विशेषज्ञों और समाज के बीच सार्थक संवाद स्थापित होगा? इतिहास बताता है कि स्थायी परिवर्तन नारेबाजी से नहीं, बल्कि वैचारिक स्पष्टता, संगठनात्मक अनुशासन और रचनात्मक दबाव से आते हैं।

भारत की युवा आबादी उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। लेकिन यही शक्ति यदि निराशा, बेरोजगारी और असंतोष से घिर जाए तो विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के लिए उपयोग का साधन भी बन सकती है। आज देश का युवा प्रतियोगी परीक्षाओं, रोजगार और भविष्य को लेकर चिंतित है। यह चिंता वास्तविक है। लेकिन हर वास्तविक चिंता के साथ एक खतरा भी जुड़ा होता है-उसका राजनीतिक दोहन। जब किसी आंदोलन के पीछे विभिन्न राजनीतिक समूहों, सत्ता-विरोधी संगठनों और वैचारिक एजेंडों की उपस्थिति दिखाई देने लगे, तब यह आशंका स्वाभाविक हो जाती है कि कहीं युवाओं की पीड़ा को राजनीतिक हथियार तो नहीं बनाया जा रहा। यदि छात्र आंदोलन शिक्षा सुधार की जगह सरकार-विरोधी अभियान में बदल जाए, तो सबसे बड़ा नुकसान स्वयं छात्रों का होता है। युवाओं को यह समझना होगा कि वे किसी राजनीतिक प्रयोगशाला के उपकरण नहीं हैं। उनकी ऊर्जा राष्ट्र निर्माण के लिए है, किसी छिपे हुए राजनीतिक एजेंडे के लिए नहीं।

सीजेपी के समर्थकों द्वारा कभी-कभी नेपाल, बांग्लादेश अथवा अन्य देशों में हुए युवा आंदोलनों का उल्लेख किया जाता है। ऐसी तुलना न केवल जल्दबाजी है बल्कि भ्रामक भी हो सकती है। भारत की लोकतांत्रिक संरचना, संस्थागत शक्ति, न्यायिक व्यवस्था, मीडिया की स्वतंत्रता और संवैधानिक ढांचा पड़ोसी देशों से भिन्न है। जिन परिस्थितियों में अन्य देशों में जनआंदोलन उभरे, वे परिस्थितियां भारत में मौजूद नहीं हैं। भारत में चुनावी परिवर्तन की शक्ति व्यवस्था है। यहां सरकारें जनमत से बनती और बदलती हैं। इसलिए भारत के युवाओं को विदेशी या पड़ोसी देशों के

आंदोलनों की भावनात्मक तुलना के बजाय भारतीय लोकतंत्र की विशेषताओं को समझना चाहिए। हर देश की राजनीतिक परिस्थितियां अलग होती हैं। इसलिए विदेशी उदाहरणों के आधार पर भारत में असंतोष को भड़काना न तो बौद्धिक रूप से उचित है और न ही राष्ट्रीय हित में।

आज सोशल मीडिया किसी भी विचार को कुछ ही घंटों में लाखों लोगों तक पहुंचा सकता है। लेकिन यही उसकी सबसे बड़ी चुनौती भी है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लोकप्रियता और वैधता एक जैसी चीजें नहीं हैं। कई बार कोई विचार ट्रेंड तो बन जाता है, लेकिन उसके पास न स्पष्ट दृष्टि होती है, न कोई रचनात्मक कार्यक्रम और न कोई उत्तरदायित्व। सोशल मीडिया पर वायरल होना लोकतांत्रिक स्वीकृति का प्रमाण नहीं है। ‘काँकरोच जनता पार्टी’ का तेजी से लोकप्रिय होना इस बात का संकेत अवश्य है कि युवाओं में असंतोष है, लेकिन यह इस बात का प्रमाण नहीं कि आंदोलन का मार्ग सही है। लोकतंत्र में ट्रेंडिंग हैशटैग से अधिक महत्व तथ्यों, नीति और संस्थागत संवाद का होता है। यदि राजनीति केवल मीम, व्यंग्य और डिजिटल आक्रोश तक सीमित हो जाए तो लोकतंत्र धीरे-धीरे विचारशील नागरिकता से हटकर भीड़तंत्र में बदल सकता है।

भारत ने वर्ष २०४७ तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लिया है। यह लक्ष्य केवल आर्थिक विकास का नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिरता, संस्थागत विश्वास और राष्ट्रीय एकता का भी है। यदि युवा शक्ति का बड़ा हिस्सा निरंतर अविश्वास, नकारात्मकता और टकराव की राजनीति की ओर आकर्षित होता है, तो यह लक्ष्य प्रभावित हो सकता है। विकास के लिए केवल आलोचना नहीं, बल्कि सहभागिता भी आवश्यक है। युवाओं को सरकार से प्रश्न पूछने चाहिए, लेकिन साथ ही समाधान भी प्रस्तुत करने चाहिए। उन्हें जवाबदेही मांगनी चाहिए, लेकिन संस्थाओं के प्रति सम्मान भी बनाए रखना चाहिए। लोकतंत्र की सफलता विरोध और सहयोग के संतुलन में निहित है। इस पूरे प्रकरण का एक महत्वपूर्ण पक्ष उन राजनीतिक दलों और नेताओं की भूमिका है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ऐसे आंदोलनों को समर्थन देते दिखाई देते हैं।

यदि कोई राजनीतिक दल वास्तव में शिक्षा सुधार चाहता है तो उसे संसद,

विधानसभाओं और नीति मंत्रों पर ठोस प्रस्ताव रखने चाहिए। लेकिन यदि छात्र असंतोष को केवल सरकार को घेरने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, तो यह लोकतंत्र और युवाओं दोनों के साथ अन्याय है। राजनीतिक दलों को स्पष्ट करना चाहिए कि वे शिक्षा सुधार के लिए क्या ठोस कार्यक्रम रखते हैं। केवल विरोध का समर्थन करना पर्याप्त नहीं है। लोकतंत्र में जिम्मेदार विपक्ष का दायित्व विकल्प प्रस्तुत करना भी होता है। परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता, पेपर लीक पर कठोर दंड, रोजगार सृजन, शिक्षा की गुणवत्ता और युवाओं के लिए अवसरों का विस्तार-ये सभी वास्तविक और महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। लेकिन इनका समाधान व्यंग्यात्मक राजनीति या प्रतीकात्मक आक्रोश में नहीं है। समाधान सरकार, न्यायपालिका, शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, छात्र संगठनों और समाज के बीच निरंतर संवाद में है। आवश्यकता इस बात की है कि युवाओं के असंतोष को रचनात्मक ऊर्जा में बदला जाए। भारत का लोकतंत्र विरोध को स्वीकार करता है, लेकिन वह विरोध तभी सार्थक होता है जब वह व्यवस्था को तोड़ने के बजाय सुधारने की दिशा में आगे बढ़े।

‘काँकरोच जनता पार्टी’ जैसी प्रवृत्तियां पहली दृष्टि में लोकतांत्रिक व्यंग्य और युवा असंतोष की अभिव्यक्ति लग सकती हैं, लेकिन इनके दूरगामी प्रभावों की गंभीर समीक्षा आवश्यक है। यदि राजनीति उपहास, प्रतीकात्मक आक्रोश और डिजिटल उत्तेजना तक सीमित हो जाएगी, तो लोकतांत्रिक विमर्श की गुणवत्ता प्रभावित होगी। भारत को आज ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो प्रश्न भी पूछें और समाधान भी खोजें। जो विरोध भी करें और राष्ट्र निर्माण में भागीदारी भी निभाएं। लोकतंत्र की शक्ति संघर्ष में नहीं-संवाद में है, विभाजन में नहीं-समन्वय में है और तात्कालिक उत्तेजना में नहीं-दीर्घकालिक राष्ट्रहित में है। इसलिए समय की मांग है कि युवा, राजनीतिक दल और समाज सभी मिलकर यह विचार करें कि क्या ‘काँकरोच राजनीति’ वास्तव में लोकतंत्र को मजबूत करेगी, या फिर वह भारत की लोकतांत्रिक संस्कृति, राजनीतिक मर्यादाओं और विकसित भारत-२०४७ के राष्ट्रीय संकल्प के सामने एक नई चुनौती बनकर उभरेगी। यही प्रश्न आज सबसे अधिक प्रासंगिक है।

बागेश्वर बाबा के सामने पड़ गए डॉली चायवाला, बालों पर हुए फिदा

नागपुर : महाराष्ट्र के नागपुर में चल रही बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की कथा इन दिनों सुर्खियों में है। रेशीमबाग स्थित मैदान पर आयोजित इस दिव्य कथा के दौरान एक बेहद दिलचस्प वाक्या सामने आया, जब दुनिया भर में मशहूर डॉली चायवाला बाबा का आशीर्वाद लेने पहुंचे।

डॉली चायवाला को कथा पंडाल में देखकर बाबा बागेश्वर भी खुद को रोक नहीं पाए और उन्होंने मंच से ही मजाकिया अंदाज में डॉली का स्वागत किया, जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

मंच पर जैसे ही डॉली चायवाला पहुंचे, धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने मुस्कुराते हुए कहा कि जब दुनिया के सबसे अमीर इंसानों में शुमार बिल गेट्स आपकी चाय पीने आ सकते हैं, तो हमारा सौभाग्य है कि आप हमारी कथा में आए। बाबा



के इस अंदाज पर पूरा पंडाल तालियों से गूंज उठा।
वीआईपी ट्रीटमेंट और सोशल मीडिया पर धूम कथा के दौरान डॉली चायवाला को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था और उन्हें मंच के ठीक सामने वीआईपी गैलरी में जगह दी गई थी। बाबा बागेश्वर से मुलाकात के दौरान डॉली ने अपने चिर-परिचित अंदाज में हाथ जोड़कर बाबा का अभिवादन किया और मंच

पर जाकर उनका आशीर्वाद लिया।
नागपुर कथा का सियासी अंवर नागपुर के रेशीमबाग मैदान को संघ का गढ़ माना जाता है और वहां बाबा बागेश्वर की कथा में इतनी बड़ी संख्या में युवाओं और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स का जुटना कई मायनों में अहम है। डॉली चायवाला जैसी जमीनी हस्तियों को मंच देना बाबा के लोक-कनेक्ट को और मजबूत करता है।

सोनम वांगचुक को हाईकोर्ट से नहीं मिली राहत

सफ़दरजंग अस्पताल में ही जारी रहेगा इलाज

नई दिल्ली : सोनम वांगचुक को दिल्ली हाईकोर्ट से बड़ा झटका लगा है. कोर्ट ने उन्हें प्राइवेट अस्पताल में शिफ्ट करने की मांग पर फिलहाल को राहत देने से इनकार कर दिया. अब उनकी पत्नी गीतांजलि आंग्मो इस फैसले को चुनौती देते हुए सोमवार को दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस के समक्ष अपील करेंगी और मामले में जल्द सुनवाई की मांग करेंगी. हाईकोर्ट ने माना कि सोनम वांगचुक की बिगड़ती स्वास्थ्य स्थिति को देखते हुए सरकार का उन्हें

अस्पताल में भर्ती कराने का फैसला उचित था. अदालत ने यह भी कहा कि इलाज से जुड़े सभी मेडिकल फैसले डॉक्टर, मेडिकल जर्नल और सोनम वांगचुक की सहमति के आधार पर लिए जाएंगे. फिलहाल उनका इलाज सफदरजंग अस्पताल में जारी रहेगा. उनकी निगरानी सफदरजंग और एस के डॉक्टरों की टीम करेगी. सरकार, दिल्ली पुलिस और अस्पताल को तीन दिन के भीतर स्टेटस रिपोर्ट भी दाखिल करने का निर्देश दिया गया है. सोनम वांगचुक की तरफ से वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने कोर्ट से कहा कि उन्हें सफदरजंग अस्पताल से प्राइवेट अस्पताल में

शिफ्ट करने की अनुमति दी जाए. उनका कहना था कि वांगचुक को अपने डॉक्टरों और वकीलों तक पूरी पहुंच नहीं मिल रही. मरीज को अपनी पसंद के अस्पताल में इलाज कराने का अधिकार है. उन्होंने बताया कि प्राइवेट अस्पताल एंबुलेंस भेजने के लिए तैयार है और उनकी मांग सिर्फ इलाज के लिए वहां शिफ्ट करने की है. सरकार ने यह भी कहा कि सोनम वांगचुक की पत्नी, उनके भाई और साले को अस्पताल में चौबीसों घंटे मिलने की अनुमति दी गई है. तीनों के ठहरने के लिए अलग कमरा भी उपलब्ध कराया गया है.

गर्मी में भी ठंडक: रोज करें शीतली प्राणायाम

भागदौड़ भरी जीवनशैली, तनाव, बढ़ती गर्मी और अनियमित खानपान का असर आज लोगों की शारीरिक और मानसिक सेहत पर साफ दिखाई देता है। ऐसे में आप रोजाना सुबह शीतली प्राणायाम कर सकते हैं। यह योगासन तनाव, शरीर की गर्मी और बढ़ते स्ट्रेस को कम करने में मदद करता है। एक्सपर्ट्स बताते हैं कि इस आसन की नियंत्रित श्वास तकनीकें तनाव कम करने और ऑटोनॉमिक नर्वस सिस्टम को संतुलित करने में सहायक हो सकती हैं।

गर्मियां आते ही लोग तेज धूप और पसीने की वजह से परेशान रहते हैं। योगा एक्सपर्ट्स बताते हैं कि गर्मियों में बाहरी तापमान का प्रभाव शरीर की गर्मी को अनियंत्रित कर सकता है। ऐसे में आप शीतली प्राणायाम की प्रैक्टिस नियमित रूप से कर सकते हैं। शीतली प्राणायाम सांस लेने की एक पारंपरिक योग तकनीक है, जो शरीर को ठंडा और शांत रखने के लिए जानी जाती है। संस्कृत शब्द 'शीतली' का अर्थ है ठंडा या सुकून देने वाला।

यह योगियों के लिए, खासकर गर्मी के मौसम में या मानसिक तनाव के समय, शरीर और मन को संतुलित और शांत रखने के लिए बहुत मददगार तकनीक है। हिमालय सिद्ध अक्षर (लेखक व संस्थापक अक्षर योग केंद्र) कहते हैं कि इस योगासन में जब मुंह से ठंडी हवा अंदर खींचकर और नाक से बाहर निकालते हैं, तो शीतली प्राणायाम करने वाले व्यक्ति को ताजगी, शांति और सुकून का अनुभव होता है। यदि आप रोजाना

१० मिनट में बॉडी हीट और एसिडिटी में आएगी कमी

सुबह व शाम के समय 10 से 15 मिनट इसे करते हैं तो आपको इसके फायदे महसूस होने लगते हैं।

शीतली प्राणायाम के क्या फायदे होते हैं?
शरीर को प्राकृतिक रूप से ठंडा करता है, शीतली प्राणायाम का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे शरीर में ठंडक का एहसास होता है। गर्मी के मौसम में या कसरत के बाद, शरीर अपने अंदर के तापमान को एडजस्ट करने की कोशिश करता है। मुड़ी हुई जीभ से धीरे-धीरे हवा अंदर खींचने पर ठंडक का एहसास होता है, जो लगभग तुरंत महसूस होता है। नियमित अभ्यास से ताजगी और शरीर में प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। कई लोग शीतली प्राणायाम के अभ्यास के बाद हल्कापन और आराम महसूस करते हैं।

तनाव कम करने में सहायक
आजकल की जीवनशैली भागदौड़, जिम्मेदारियों और मानसिक व्यस्तता से भरी होती है, जो लगभग हर समय बनी रहती है। शीतली प्राणायाम करने वाले व्यक्ति को ताजगी, शांति और सुकून का अनुभव होता है। यदि आप रोजाना

प्राणायाम मन और शरीर को शांत करने का एक आसान तरीका है। धीरे-धीरे सांस लेने से ध्यान अंदर की ओर केंद्रित होता है और मन शांत व जागरूक अवस्था में आता है।

एसिडिटी से राहत प्रदान करे
पाचन तंत्र का ठीक रहना अच्छी सेहत और एनर्जी के लिए बहुत जरूरी है। पारंपरिक रूप से

शीतली प्राणायाम की प्रकृति ठंडी मानी जाती है, जो पाचन तंत्र को ठीक करने में और शांत करने में मदद कर सकती है। कई योग परंपराओं में माना जाता है कि यह शरीर से अतिरिक्त गर्मी को दूर करता है, कई बार गर्मी से पाचन नली में परेशानी भी हो सकती है।

नींद में सुधार करे
ऊर्जा, एकाग्रता और अच्छी सेहत बनाए रखने के लिए रात को अच्छी नींद लेना बहुत जरूरी माना जाता है। सोने से पहले शरीर और मन शांत हों तो गहरी नींद आसानी से आती है। शीतली प्राणायाम शाम के समय किया जाने वाला एक हल्का अभ्यास है, जिससे शरीर को शांत करके नींद की कमी को दूर किया जा सकता है। धीरे-धीरे सांस लेने से आराम मिलता है और मन शांत होता है। जैसे-जैसे तनाव धीरे-धीरे कम होता है, शरीर आराम और रिकवरी की स्थिति में आ जाता है।

मानसिक एकाग्रता को बढ़ाए
शांत मन से आप किसी भी काम को फोकस बनाए रख कर पाते हैं। शीतली प्राणायाम एक ऐसी कसरत है जो सांस के जरिए

ऑक्सीजन लेवल को बढ़ावा देती है और ध्यान को वर्तमान समय पर केंद्रित करती है। यह प्रक्रिया मानसिक ताजगी का एहसास कराने और जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकती है। जिससे मन का भटकवा कम होता है और आपके सीखने की क्षमता और प्रोडक्टिविटी बढ़ जाती है।

शीतली प्राणायाम करने का सही तरीका क्या है?
● रीढ़ की हड्डी सीधी और कंधे नीचे रखकर आराम से बैठें।
● अपनी आंखें बंद करें और शरीर को आराम दें।
● जीभ को मोड़कर नली जैसा आकार बनाएं। अगर जीभ को मोड़ना मुश्किल हो, तो होंठों को थोड़ा सिकोड़ सकते हैं।
● मुड़ी हुई जीभ के जरिए मुंह से धीरे-धीरे और गहरी सांस लें।
● सांस अंदर लेते समय होंठों को बंद रखें।
● फिर, नाक से धीरे-धीरे सांस बाहर छोड़ें।
● इसे 5-10 बार दोहराएं (सांस लेने की प्रक्रिया सहज और आरामदायक होनी चाहिए)।

इस प्राणायाम का अभ्यास करना बहुत आसान है और यह हर उम्र और जीवनशैली के लोगों के लिए उपयुक्त है। दिन में बस कुछ मिनट आप इस तरह से सांस लेने से शारीरिक स्वास्थ्य, मन की शांति और आंतरिक संतुलन पर सकारात्मक असर डाल सकते हैं। शीतली प्राणायाम पूरी तरह से योग अभ्यास का एक हिस्सा है जो एक स्वस्थ, एनर्जेटिक और संतुलित जीवनशैली बनाए रखने में मदद करता है।

स्मोकिंग से पेट और डायजेशन को भी होता है तगड़ा नुकसान

ज्यादातर लोगों को लगता है कि धूम्रपान केवल लंस और हार्ट को ही प्रभावित कर सकती है। लेकिन, लगातार लंबे समय तक स्मोकिंग करने से लंस, हार्ट के साथ ही डायजेशन प्रक्रिया भी प्रभावित कर सकती है। स्मोकिंग की वजह से जब पाचन क्रिया प्रभावित होती है तो व्यक्ति को नियमित रूप से सीने में जलन, सीने में चुभन या मुंह में खट्टापान महसूस होता है। कई एक्सपर्ट्स बताते हैं कि सिगरेट में मौजूद निकोटीन भोजन नली (Esophagus) और पेट के बीच मौजूद Lower Esophageal Sphincter (LES) को कमजोर कर सकता



है। यह वाल्व सामान्य स्थिति में पेट के एसिड को ऊपर आने से रोकता है। जब यह ढीला पड़ जाता है, तो पेट का एसिड वापस भोजन नली में पहुंचने लगता है, जिससे सीने में जलन (Heartburn), खट्टी डकारें और एसिड रिफ्लक्स जैसी समस्याएं बढ़ जाती हैं। इस स्थिति में स्मोकिंग एक बड़ी वजह बन सकती है।

बड़ा प्रभाव लोकर एसोफेगस स्फिकटर पर पड़ता है। दरसअल, सिगरेट में मौजूद निकोटीन इस मांसपेशी की पकड़ को कमजोर कर देता है, जिससे पेट का एसिड आसानी से भोजन नली में लौट सकता है। यही एसिड रिफ्लक्स और हार्टबर्न का मुख्य कारण बनता है।

स्मोकिंग से डायजेस्टिव एसिड पर प्रभाव : धूम्रपान गैस्ट्रिक एसिड के उत्पादन और पेट की सामान्य कार्यप्रणाली को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा सिगरेट या धूम्रपान करने से पेट की अंदरूनी परत (Gastric Mucosa) की सुरक्षा क्षमता भी कम हो सकती है, जिससे एसिड का असर अधिक महसूस होता है। लंबे समय तक धूम्रपान करने वालों में गैस्ट्राइटिस और अल्सर का जोखिम भी बढ़ सकता है।

पेट भरा हुआ महसूस होना : धूम्रपान पेट के खाली होने (Gas-tric Emptying) की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। जब भोजन लंबे समय तक पेट में रहता है, तो एसिड बनने और रिफ्लक्स का खतरा बढ़ जाता है। हालांकि यह प्रभाव हर व्यक्ति में समान नहीं होता, लेकिन GERD वाले मरीजों में इसका असर अधिक देखा जा सकता है।

लार कम बनना : लार केवल भोजन पचाने में ही मदद नहीं करती बल्कि यह भोजन नली में पहुंचे एसिड को भी निष्क्रिय करने का काम करती है। लेकिन, धूम्रपान की आदत लार बनने की मात्रा कम कर सकती है, जिससे एसिड अधिक देर तक भोजन नली के संपर्क में रहता है और जलन बढ़ जाती है।

क्या स्मोकिंग छोड़ने से एसिडिटी में राहत मिल सकती है?
स्मोकिंग छोड़ने से GERD और सीने में जलन के लक्षणों में सुधार आ सकता है, खासकर उन लोगों में जो नियमित धूम्रपान करते हैं। धूम्रपान बंद करने के बाद लोअर एसोफेगस स्फिकटर की कार्यक्षमता बेहतर हो सकती है हालांकि यदि एसिडिटी लंबे समय से बनी हुई है, तो केवल स्मोकिंग छोड़ना पर्याप्त नहीं हो सकता। ऐसे मामलों में डॉक्टर दवाओं, खानपान में बदलाव और जीवनशैली सुधार की भी सलाह देते हैं।

यदि किसी व्यक्ति को धूम्रपान की वजह से एसिडिटी या सीने में जलन के लक्षण महसूस हो रहे हैं तो उनको तुरंत धूम्रपान को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए। साथत ही, इस दौरान अधिक मसालेदार, तला हुआ और कैदी भोजन करने से भी बचना चाहिए। खाने के तुरंत बाद सिगरेट पीना या लेट जाना भी एसिडिटी का कारण बन सकता है। यदि आपको बार-बार एसिडिटी हो रही है तो ऐसे में तुरंत किसी डॉक्टर से संपर्क करें।

शरीर को जरूरी पोषण देता है जामुन का फल

मानसून का मौसम आते ही बाजार में कई तरह के ताजे फल दिखाई देने लगते हैं. आम और लीची के बीच एक ऐसा फल भी होता है, जिसकी उपलब्धता बहुत कम समय के लिए रहती है. यह फल स्वाद के साथ-साथ अपने पोषण गुणों के लिए भी जाना जाता है. इसके सीजन में इसका सीमित मात्रा में सेवन शरीर को कई तरह के फायदे पहुंचा सकता है.

जामुन एक मौसमी फल है, जो आमतौर पर साल में केवल एक-दो महीने के लिए ही बाजार में उपलब्ध रहता है. यही वजह है कि इसके मौसम में इसे खाने की सलाह दी जाती है. जामुन में विटामिन-सी, फाइबर, पोटेशियम, आयरन और कई प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं, जो शरीर को जरूरी पोषण देने में मदद करते हैं.

जामुन का गहरा बैंगनी रंग उसमें मौजूद

एंथोसायनिन नामक एंटीऑक्सीडेंट के कारण होता है. यह तत्व शरीर को फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से बचाने में मदद कर सकता है. साथ ही यह कोशिकाओं को स्वस्थ बनाए रखने और शरीर की सामान्य कार्यप्रणाली को सपोर्ट करने में भी सहायक माना जाता है.

ब्लड शुगर और पाचन के लिए कैसे फायदेमंद है? जामुन में मौजूद फाइबर पाचन तंत्र को बेहतर बनाए रखने में मदद करता है. इसके सेवन से पेट लंबे समय तक भरा हुआ महसूस हो सकता है और पाचन प्रक्रिया को भी सहारा मिलता है. कुछ अध्ययनों में यह भी बताया गया है कि जामुन में पाए जाने वाले प्राकृतिक तत्व ब्लड शुगर के संतुलन को बनाए रखने में सहायक हो सकते हैं. हालांकि, इसे किसी भी बीमारी की दवा नहीं माना जाना चाहिए.

आयरन है कम, ऐसी महिलाएं पीएं अमरूद का जूस

महिलाओं में आयरन की कमी और आयरन डेफिशिएंसी एनीमिया (Iron Deficiency Anemia-IDA) एक आम स्वास्थ्य समस्या है। मासिक धर्म, गर्भावस्था, स्तनपान और संतुलित आहार की कमी के कारण कई महिलाओं में हीमोग्लोबिन का स्तर कम हो जाता है, जिससे कमजोरी, थकान, चक्कर आना और सांस फूलने जैसी समस्याएं हो सकती हैं। ऐसे में महिलाएं अक्सर आयरन से भरपूर खाद्य पदार्थों और घरेलू उपायों से इस कमी को दूर करने का प्रयास करती हैं। जिसमें आप अमरूद के जूस को शामिल कर सकती हैं। डायटिशियन गरिमा तिवारी (चीफ क्लिनिकल न्यूट्रिशनिस्ट, क्लिनिकल न्यूट्रिशन और डायटेटिक्स विभाग, शारदाकेयर हेल्थसिटी) कहती हैं कि अमरूद आयरन का बहुत अच्छा स्रोत नहीं है, फिर भी यह शरीर में आयरन के अवशोषण में मदद करता है, जिससे एनीमिया और खून की कमी को दूर करने में यह अहम भूमिका निभा सकता है।

आयरन डेफिशिएंसी एनीमिया क्या है?
आयरन डेफिशिएंसी एनीमिया वह स्थिति है जब शरीर में आयरन की कमी के कारण पर्याप्त हीमोग्लोबिन नहीं बन पाता। हीमोग्लोबिन लाल रक्त कोशिकाओं (RBCs) में पाया जाने वाला प्रोटीन है, जो पूरे शरीर में ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करता है।

महिलाओं में इसके प्रमुख कारण में अधिक मासिक धर्म



(Heavy Periods), गर्भावस्था, स्तनपान, आयरन युक्त भोजन की कमी, आंतों में आयरन का कम अवशोषण और बार-बार रक्तस्राव को शामिल किया जाता है। आयरन की कमी में महिलाओं को अत्यधिक थकान, चक्कर आना, त्वचा का पीला पड़ना, सिरदर्द और, बाल झड़ना आदि समस्याएं महसूस होती हैं।

डायटिशियन के अनुसार अमरूद में आयरन की अपेक्षा विटामिन C बहुत ज्यादा मात्रा में होता है। यह पोषक तत्व नॉन-हीम आयरन (non-heme iron) के अवशोषण को बढ़ाता है। आयरन का यह रूप पालक, दाल, बीन्स और टोफू जैसे पौधों से मिलने वाले खाद्य पदार्थों में पाया जाता है। विटामिन सी नॉन-हीम आयरन को ऐसे रूप में बदल देता है जिसे शरीर आसानी से सोख सकता है।

डॉ. गरिमा बताती हैं, "अगर आप दाल या हरी पत्तेदार सब्जियों जैसे आयरन से भरपूर शाकाहारी खाद्य पदार्थ खा रहे हैं, तो खाने के

साथ या खाने के तुरंत बाद एक पूरा अमरूद खाने से आयरन का अवशोषण बेहतर हो सकता है।"

पाचन तंत्र के लिए आवश्यक
अमरूद का जूस पीने की तुलना में पूरा अमरूद खाना ज्यादा सेहतमंद विकल्प हो सकता है। इस फल से डाइटरी फाइबर मिलता है, जो पाचन स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, पेट भरा हुआ महसूस करता है और ब्लड शुकर लेवल को नियंत्रित करने में मदद करता है। यह एंटीऑक्सीडेंट और पोटेशियम का भी अच्छा स्रोत है, जो सेहत के लिए फायदेमंद है।
अमरूद और आयरन सप्लीमेंट्स
यदि किसी महिला में आयरन डेफिशिएंसी एनीमिया की पुष्टि हो चुकी है, तो उनके द्वारा केवल अमरूद का जूस पीने या अमरूद से आयरन की कमी पूरी नहीं होगी। डॉक्टर द्वारा दी गई आयरन

बार-बार होने वाले सिरदर्द को हल्के में नहीं लेना चाहिए?

कब MRI कराना जरूरी है और कब नहीं?

सिरदर्द स्वास्थ्य से जुड़ी सबसे आम समस्याओं में से एक है और ज्यादातर मामलों में, यह किसी गंभीर मेडिकल समस्या की वजह से नहीं होता है। लेकिन इसके बावजूद भी कई लोगों को सिरदर्द होने पर चिंता होने लगती है कि उनके सिर में होने वाला दर्द कहीं ब्रेन ट्यूमर या किसी और गंभीर बीमारी का संकेत हो सकता है। ऐसे में कई बार व्यक्ति MRI स्कैन करवाने की मांग करने लगते हैं। इस पर डॉ. लोकेश बी (सीनियर कंसल्टेंट – न्यूरोलॉजी, एस्टर सीएमआई हॉस्पिटल, बैंगलोर) कहते हैं कि हर सिरदर्द के लिए MRI की जरूरत नहीं होती है। क्योंकि कई बार यह सामान्य होते हैं, लेकिन अगर किसी व्यक्ति को बार-बार सिरदर्द हो रहा है या उसको सिरदर्द के साथ गंभीर लक्षण भी महसूस हो रहे हैं तो ऐसे में डॉक्टर कंप्लीट जांच के लिए कुछ मामलों में एमआरआई की भी सलाह दे सकते हैं। लेकिन, किन स्थितियों में एमआरआई कराना है यह केवल डॉक्टर ही निर्णय ले सकते हैं।

क्या बार-बार सिरदर्द होने पर हमेशा MRI की जरूरत होती है?

डॉक्टर बताते हैं कि बार-बार सिरदर्द होने पर हमेशा MRI की जरूरत नहीं होती है। ज्यादातर सिरदर्द को 'प्राइमरी हेडेक' (primary headaches) की श्रेणी में रखा जाता है, जैसे कि टेंशन हेडेक, माइग्रेन या क्लस्टर हेडेक। इन स्थितियों का पता आमतौर पर व्यक्ति के लक्षणों, मेडिकल हिस्ट्री और शारीरिक जांच के आधार पर लगाया जाता है। ऐसे मामलों में अक्सर MRI की जरूरत नहीं होती क्योंकि स्कैन से किसी गंभीर अंदरूनी समस्या का पता चलने की संभावना कम होती है।

सिरदर्द में डॉक्टर इसकी सलाह क्यों देते हैं?

एमआरआई (Magnetic Resonance Imaging) एक उन्नत इमेजिंग टेस्ट है, जो चुंबकीय तरंगों और रेडियो वेव्स की मदद से मस्तिष्क और आसपास की बनावट की विस्तृत तस्वीर तैयार



करता है। इसमें एक्स-रे जैसी रेडिएशन का उपयोग नहीं होता। यदि डॉक्टर को संदेह हो कि सिरदर्द के पीछे कोई गंभीर कारण हो सकता है, तो MRI के जरिए उसकी पुष्टि की जा सकती है।

सिरदर्द में MRI की जरूरत कब होती है?

सिरदर्द में MRI तब जरूरी हो जाता है जब कुछ चेतावनी वाले संकेत, जिन्हें अक्सर "रेड फ्लैग्स" (red flags) कहा जाता है, दिखाई देते हैं। जब किसी व्यक्ति अचानक और तेज सिरदर्द जो कुछ ही सेकंड या मिनटों में बहुत ज्यादा बढ़ जाए, तो उसके लिए एमआरआई स्कैन की आवश्यकता हो सकती है। इसके अलावा, 50 साल से ज्यादा उम्र के लोगों में पहली बार सिरदर्द; और ऐसा सिरदर्द जिसके साथ बुखार, दौरे पड़ना, उलझन, कमजोरी, बोलने में कठिनाई या देखने की क्षमता में बदलाव जैसे लक्षण हों तब भी डॉक्टर आपको एमआरआई कराने की सलाह दे सकते हैं। अगर सिरदर्द लगातार बिगड़ता जा रहा हो, खांसने या जोर लगाने पर शुरू होता हो, या ऐसे व्यक्ति को हो जिसे कैंसर, इम्यून सिस्टम से जुड़ी बीमारियां या हाल ही में सिर में चोट लगी हो, तो भी MRI की सलाह दी जा सकती है।

किन लोगों को होती है एमआरआई की आवश्यकता
जिन लोगों को सिरदर्द का इलाज करने के बाद भी फायदा नहीं हो रहा हो या जिनके सिरदर्द के पैटर्न में काफी बदलाव आया हो, उनकी इमेजिंग के जरिए और अधिक जांच की जरूरत पड़ सकती है। इसके साथ ही बच्चों में, अगर सिरदर्द के साथ न्यूरोलॉजिकल लक्षण, ग्रोथ से जुड़ी समस्या या जांच में असामान्य बातें सामने आती हैं, तो MRI की सलाह दी जा सकती है।

सिरदर्द में डॉक्टर को कब MRI की सलाह देनी चाहिए?
हालांकि MRI दिमाग से जुड़ी कुछ बीमारियों का पता लगाने के लिए एक उपयोगी टूल है, लेकिन अनावश्यक स्कैन से हेल्थकेयर का खर्च बढ़ सकता है और ऐसी हानिरहित असामान्यताएं (ab-normalities) पता चल सकती हैं जिनसे बेवजह चिंता बढ़ सकती है। इसलिए, डॉक्टर को सिरदर्द में MRI करवाने का फैसला सिर्फ डर के बजाय क्लिनिकल असेसमेंट (चिकित्सकीय मूल्यांकन) के आधार पर लेना चाहिए।

फिलहाल डॉक्टर कहते हैं कि ज्यादातर सिरदर्द के लिए MRI की जरूरत नहीं होती है। यह स्कैन आमतौर पर उन स्थितियों के लिए किया जाता है जहां लक्षण किसी संभावित न्यूरोलॉजिकल समस्या का संकेत देते हैं या जब कुछ खास चेतावनी वाले संकेत मौजूद होते हैं। यदि सिरदर्द के साथ-साथ कमजोरी, धुंधला दिखना, बोलने में परेशानी, बार-बार उल्टी या बेहोशी जैसे लक्षण हों, तो तुरंत न्यूरोलॉजिस्ट से संपर्क करना चाहिए। किसी समय पर जांच और इलाज गंभीर जटिलताओं से बचा सकता है।

झेनोफोबिया का संकेत क्या है?

कभी-कभी किसी पहली मुलाकात से पहले हाथ कांपना, पसीने छूटना और बेचैनी शुरू होना? दिल की धक-धक तेज होना, गला सूखना और दिमाग में सिर्फ एक ही सवाल सोचना- सामने वाला जन तो नहीं कर रहा मुझे? अगर ऐसे ख्याल आपको भी परेशान करते हैं, तो घबराएं नहीं। यह सब कोई असामान्य बात नहीं है। National Institute of Mental Health में पब्लिश्ड रिपोर्ट के अनुसार बीते वर्ष यूएस में 7.1 प्रतिशत वयस्कों में इसी तरह की बेचैनी देखी गई है। अगर सामान्य शब्दों में समझें तो यह सामाजिक बेचैनी है। हालांकि भारत में मेंटल हेल्थ से जुड़े कई डेटा मौजूद हैं, लेकिन खासकर सामाजिक बेचैनी से जुड़ा कोई आधिकारिक डेटा नहीं है। सामाजिक बेचैनी (सोशल फोबिया) को क्लीनिकल टर्म में झेनोफोबिया भी कहते हैं। अब सवाल ये है कि आखिर झेनोफोबिया की समस्या क्यों हो सकती है? झेनोफोबिया के लक्षण क्या हैं और ऐसे ही कई सवालों के जवाब, जिससे आप इस समस्या से अवगत रहें।

क्या है झेनोफोबिया?

किसी अनजान से या पहली बार मिलने पर कुछ लोग घबराहट महसूस करते हैं, जिसे सोशल फोबिया कहा जाता है। किसी नए व्यक्ति से मिलने पर पसीना आना या बेचैनी महसूस होना सामाजिक चिंता से जुड़े लक्षण हैं। एक स्टडी के अनुसार ऐसी स्थिति में व्यक्ति को ऐसा लगता है कि कहीं उनके द्वारा कोई ऐसी गलती ना हो जाए, जिससे उन्हें शर्मिंदगी महसूस हो।

क्या हो सकते हैं झेनोफोबिया के लक्षण?

झेनोफोबिया की समस्या होने पर व्यक्ति अजनबियों या बाहरी लोगों से मिलने पर चिंता और मानसिक परेशानी महसूस करता है। कुछ लोगों को अजनबियों से मिलना या उनके बारे में बात करने से भी घबराहट महसूस होती। अब ऐसी समस्या कई बार लोगों के लिए बड़ी कठनाई का कारण भी बन सकती है। जैसे-
● अजनबी के बारे में सोचते या मिलते ही दिल की धड़कन तेज हो जाना।
● डर या किसी अनहोनी की आशंका महसूस होना।
● मतली या उल्टी जैसा महसूस होना।
● चक्कर आना।
● सिरदर्द होना।
● अचानक से पेशाब करने की इच्छा होना।
● मांसपेशियों में दर्द महसूस होना।
● उलझा हुआ महसूस होना।
● कानों में सीटी जैसी आवाज सुनाई देना।
● सांस लेने में कठिनाई महसूस होना।
● ठंड लगना या कंपकंपी महसूस होना।
● शरीर कांपने लगना।
● घुटन जैसा महसूस होना।

इसका कारण जब दिमाग किसी असहज स्थिति या तनाव को महसूस करता है, तो एमिडबल उसी समय हाइपोथैलेमस को मैसेज भेजता है। और तुरंत ही बॉडी का सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम एक्टिव हो जाता है। इसे फाइट या फ्लाइट प्रतिक्रिया कहते हैं। ऐसी स्थिति में एड्रेनालिन हार्मोन रिलीज होता है, जिससे दिल की धड़कन तेज हो सकती है, व्यक्ति सांस भी तेजी से लेने लग सकता है और पसीना आना भी शुरू हो सकता है।

डिस्क्रिप्शन : यह लेख केवल सामान्य जानकारी के लिए है। यह किसी भी तरह से किसी दवा या इलाज का विकल्प नहीं हो सकता। ज्यादा जानकारी के लिए हमेशा अपने डॉक्टर से संपर्क करें।

२६ फाउल, ४ येलो कार्ड, आखिरी सीटी के बाद भी बवाल

फीफा सेमीफाइनल में 'वॉर मोड'!

दूसरी बार विंबलडन चैंपियन

अटलांटा : फीफा वर्ल्ड कप २०२६ का अर्जेंटीना-इंग्लैंड सेमीफाइनल सिर्फ एक फुटबॉल मैच नहीं, बल्कि इतिहास, दुश्मनी और सियासत का विस्फोट बन गया. अटलांटा में खेले गए इस हाई-वोल्टेज मुकाबले में २६ फाउल हुए, चार येलो कार्ड निकले, खिलाड़ी कई बार आमने-सामने आए और अंतिम सीटी के बाद भी धक्का-मुक्की जारी रही. मेसी की अगुआई वाली अर्जेंटीना ने २-१ से शानदार वापसी करते हुए फाइनल का टिकट तो कटाया, लेकिन जीत के बाद 'माल्विनास (फॉकलैंड)' अर्जेंटीना का है' वाला बैनर लहराकर एक नया विवाद भी खड़ा कर दिया.

मैच से पहले अर्जेंटीना के कोच लियोनेल स्कालोनी और इंग्लैंड के मैनेजर थॉमस टुखेल ने माहौल को शांत रखने की कोशिश की थी. दोनों ने कहा था कि मैदान पर सिर्फ फुटबॉल होगी और पुरानी दुश्मनी या राजनीतिक इतिहास का असर नहीं दिखेगा... लेकिन जैसे ही मुकाबला शुरू हुआ, खिलाड़ियों के तेवर कुछ और ही कहानी बयां करने लगे.

१० मिनट में ही गर्मा गया मुकाबला
शुरुआती १० मिनट में ही दोनों टीमों ने ८ फाउल कर दिए. हर टैकल में आक्रामकता और हर ड्यूल में तनाव साफ दिखाई दे रहा था. मैच के अंत तक कुल २६ फाउल दर्ज हुए, जो इस वर्ल्ड कप के सबसे ज्यादा फिजिकल मुकाबलों में से एक रहा. रेफरी इस्माइल एलफाथ को चार ४ कार्ड दिखाते पड़े, जिनमें ३ अर्जेंटीना और १ इंग्लैंड के खिलाड़ी को मिला. मैच का पहला बड़ा विवाद तब हुआ, जब अर्जेंटीना के एंजो फर्नांडीज और इंग्लैंड के इलियट एंडरसन के बीच जोरदार टक्कर हुई. दोनों के बीच कहासुनी देखते ही देखते दोनों टीमों के खिलाड़ियों तक पहुंच गई. कुछ देर



के लिए माहौल इतना गरमा गया कि रेफरी को बीच-बचाव करना पड़ा.

इंग्लैंड के स्टार मिडफील्डर जूड बेलिघम पूरे मुकाबले में सबसे ज्यादा आक्रामक नजर आए. उन्होंने कई बार रेफरी से बहस की और अर्जेंटीना के खिलाड़ियों से भी भिड़ते दिखाई दिए. मैच के दौरान उनकी लियोनेल मेस्सी समेत कई अर्जेंटीनी खिलाड़ियों से तीखी बहस हुई. हर बार जब इंग्लैंड को लगा कि विपक्षी खिलाड़ियों ने सीमा लांघी है, बेलिघम सबसे पहले विरोध जताने पहुंच गए.

अंतिम सीटी बजने के बाद भी उनका गुस्सा शांत नहीं हुआ. टीवी कैमरों में बेलिघम और अर्जेंटीना के डिफेंडर वेलेंटिन बाकों के बीच तनातनी दिखाई दी. इसके बाद कई अर्जेंटीनी खिलाड़ी बेलिघम के आसपास जमा हो गए और दोनों टीमों के खिलाड़ियों के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिली.

हर काउंटर अटैक पर रोक,
हर ड्यूल में टकराव
अर्जेंटीना की रणनीति शुरुआत से ही बेहद आक्रामक रही. क्रिस्टियन रोमेरो और

लिसांद्रो मार्टिनेज लगातार सख्त टैकल करते रहे, जबकि रोड्रिगो डी पॉल ने इंग्लैंड के हर तेज काउंटर अटैक को रोकने के लिए सामरिक फाउल किए. मुकाबले के लगभग हर मिनट में दोनों टीमों के खिलाड़ियों के बीच तनातनी देखने को मिली.

दूसरे हाफ में एंथनी गॉर्डन ने गोल कर इंग्लैंड को १-० की बढ़त दिला दी. उस समय ऐसा लग रहा था कि थॉमस टुखेल की टीम फाइनल का टिकट काट लेगी.लेकिन मौजूदा विपक्षी चैम्पियन अर्जेंटीना ने एक बार फिर अपनी वापसी की क्षमता दिखाई. एंजो फर्नांडीज ने बराबरी का गोल कर टीम में नई जान फूँकी और फिर इंजरी टाइम में सबटीट्यूट लाउतारो मार्टिनेज ने हेडर से विजयी गोल दागकर अर्जेंटीना को २-१ से जीत दिला दी. इसके साथ ही मेसी की टीम लगातार दूसरी बार वर्ल्ड कप फाइनल में पहुंच गई, जहां उसका सामना स्पेन से होगा.

मैच खत्म होने के बाद विवाद और गहरा गया. जश्न मनाते हुए अर्जेंटीना के खिलाड़ियों ने 'The Malvinas belong to

Argentina' लिखा बैनर लहराया.

माल्विनास वही द्वीपसमूह है, जिसे ब्रिटेन फॉकलैंड आइलैंड्स के नाम से जानता है. १९८२ में इसी मुद्दे पर दोनों देशों के बीच युद्ध हुआ था. आज भी दोनों देश इन द्वीपों पर अपना-अपना दावा करते हैं. फीफा अपने टूर्नामेंटों में राजनीतिक संदेशों के प्रदर्शन को लेकर सख्त नियम रखता है. ऐसे में माना जा रहा है कि इस बैनर को लेकर अर्जेंटीना के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई हो सकती है. हालांकि अंतिम फैसला फीफा की अनुशासन समिति को करना होगा.

क्यों इतनी खास है यह प्रतिद्वंद्विता?
अर्जेंटीना और इंग्लैंड की प्रतिद्वंद्विता सिर्फ फुटबॉल तक सीमित नहीं है. इसकी जड़ें १९८२ के फॉकलैंड (माल्विनास) युद्ध में हैं. यही वजह है कि जब भी दोनों टीमें किसी बड़े टूर्नामेंट में आमने-सामने आती हैं, मुकाबला सिर्फ खेल नहीं रह जाता.

१९८६ वर्ल्ड कप क्वार्टर फाइनल में डिएगो माराडोना ने इंग्लैंड के खिलाफ दो ऐसे गोल किए, जो फुटबॉल इतिहास का हिस्सा बन गए. पहला विवादित 'हैंड ऑफ गॉड' और दूसरा 'गोल ऑफ द सेंचुरी'.

१९९८ वर्ल्ड कप में डेविड बेकहम को डिएगो सिमियोने के साथ झड़प के बाद रेड कार्ड मिला और इंग्लैंड पेनाल्टी शूटआउट में हार गया. २००२ में बेकहम ने पेनाल्टी पर गोल कर इंग्लैंड को १-० की जीत दिलाई और पुराना हिसाब कुछ हद तक चुकता किया. अटलांटा में खेला गया यह सेमीफाइनल झड़पों, सख्त टैकलों, बेलिघम और अर्जेंटीनी खिलाड़ियों की नोकझोंक, मैच के बाद हुई कहासुनी और 'माल्विनास' बैनर से जुड़े विवाद के कारण लंबे समय तक याद रखा जाएगा.

स्पेन फीफा वर्ल्ड कप के फाइनल में



फ्रांस को २-० से हराया

डलास : फीफा वर्ल्ड कप २०२६ के पहले सेमीफाइनल में स्पेन ने दमदार प्रदर्शन करते हुए फ्रांस को २-० से हराकर फाइनल में जगह बना ली. डलास के एटीएंडटी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में स्पेन ने मैच की शुरुआत से ही दबदबा बनाए रखा और दोनों हाफ में एक-एक गोल दागकर फ्रांस की चुनौती खत्म कर दी.

अब न्यू जर्सी के मेटलाइफ स्टेडियम में २० जुलाई को होने वाले फीफा वर्ल्ड कप २०२६ के फाइनल में स्पेन का सामना अर्जेंटीना और इंग्लैंड के बीच १६ जुलाई को अटलांटा स्टेडियम में होने वाले दूसरे सेमीफाइनल के विजेता से होगा. यूरोपीय चैंपियन स्पेन पिछले ३७ मैचों से अजेय है. टीम ने टूर्नामेंट में अब तक सात मैचों में सिर्फ एक गोल खाया है. फ्रांस के खिलाफ भी उसकी मजबूत डिफेंस लाइन ने विपक्षी टीम को कोई मौका नहीं दिया.

स्पेन को २२वें मिनट में बढ़त मिली. फ्रांस के डिफेंडर लुकास डिन्ये ने लामिन यमाल पर फाउल किया, जिसके बाद रेफरी ने पेनल्टी दी. मिकेल ओयार्जबिल ने पेनल्टी को गोल में बदलकर स्पेन को १-० की बढ़त दिला दी. ओयार्जबिल का टूर्नामेंट में यह ५वां गोल था. पहले फर्स्ट हाफ समाप्त होने पर स्पेन ने फ्रांस पर एक गोल की बढ़त बना ली थी और उम्मीद थी कि एम्बाप्पे की टीम दूसरे हाफ में वापसी करेगी.

दूसरे हाफ के ५८वें मिनट में स्पेन ने शानदार मूव के जरिए दूसरा

गोल किया. डैनियल ओल्मो ने बेहतरीन पास देकर पेद्रो पोरो के लिए मौका बनाया. पोरो ने इस मौके का पूरी तरह फायदा उठाया और शांत अंदाज में गोल कर स्पेन को फ्रांस पर २-० की बढ़त दिला दी. फ्रांस ने वापसी की भरपूर कोशिश की, लेकिन स्पेन की अनुशासित डिफेंस के सामने उसके खिलाड़ियों की एक नहीं चली.

२०१८ की विश्व चैंपियन और २०२२ की उपविजेता फ्रांस पूरे टूर्नामेंट में शानदार फॉर्म में थी. उसने सेमीफाइनल तक छह मैचों में १६ गोल किए और सिर्फ दो गोल खेा थे. लेकिन स्पेन के खिलाफ टीम पूरे मैच में लय हासिल नहीं कर सकी. कोच डिडिएर डेसचैम्पस ने दूसरे हाफ में कई बदलाव किए, २०१० में अपना पहला विश्व कप जीतने वाली स्पेनिश टीम अब २०२६ में दूसरी बार खिताब जीतने से सिर्फ एक कदम दूर है.

फाइनल से पहले स्पेन की बढ़ी टेंशन, २ खिलाड़ियों ने छोड़ी फुल ट्रेनिंग फीफा वर्ल्ड कप २०२६ के फाइनल में रविवार को स्पेन का सामना अर्जेंटीना से होना है. इस महामुकाबले से पहले स्पेनिश टीम की टेंशन बढ़ गई है. टीम के दो स्टार खिलाड़ी लैमिन यमाल और पेद्रो पोरो गुरुवार को बाकी खिलाड़ियों के साथ नियमित ट्रेनिंग में शामिल नहीं हुए. दोनों ने न्यू जर्सी में टीम से अलग रिकवरी सेशन किया.हालांकि स्पेनिश फुटबॉल फेडरेशन और मुख्य कोच लुइस डे ला फुएंते ने साफ कर दिया कि घबराने की जरूरत नहीं है. दोनों खिलाड़ियों के फाइनल में खेलने की पूरी उम्मीद है..

भारतीय महिलाओं की लॉर्ड्स में ऐतिहासिक जीत

२७० रन से इंग्लैंड को मात देकर बिगाड़ा दो खिलाड़ियों का फेयरवेल

नई दिल्ली : इंग्लैंड महिला क्रिकेट टीम के खिलाफ लॉर्ड्स में एकमात्र खेले गए टेस्ट मैच टीम इंडिया ने जीत हासिल की। ये पहला मौका था, जब दोनों टीमें लॉर्ड्स में टेस्ट मैच खेल रही थीं और इंग्लैंड को उनके घर में घुसकर भारतीय महिला टीम ने धूल चटाई है। भारत ने इंग्लैंड के सामने ४५६ रनों का पहाड़ जैसा स्कोर खड़ा किया था, जिसे अंग्रेज टीम हासिल नहीं कर सकी।

महिला टीमें पहली बार इस मैदान पर टेस्ट मैच खेल रही थीं, जिसे भारत ने अपने नाम कर लिया है। पुरुष टीम की बात करें, तो उन्होंने लॉर्ड्स में तीन बार टेस्ट मैच में जीत हासिल की है, जिसमें १९८६, २०१४ और २०२१ शामिल है। हालांकि, महिला टीम ने ये कारनामा पहली बार में ही कर दिखाया। भारत ने मुकाबले को २७० रनों से अपने नाम कर लिया है।

भारत ने इंग्लैंड महिला क्रिकेट



टीम के सामने जीत के लिए ४५७ रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया था। इंग्लैंड की महिला टीम इसके सामने १८६ रनों पर ऑलआउट हो गई और मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा। उनके लिए दूसरी पारी में एमी जोन्स और सोफी एक्लेस्टोन ने अर्धशतक लगाया लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सकी।

इंग्लैंड की टेमी ब्यूमोट और हीदर नाइट का ये आखिरी टेस्ट मैच था और ऐसे में उन्हें अपने आखिरी मुकाबले में जीत नहीं मिली।

मंधाना, क्रांति गौड़ का कमाल
इंग्लैंड के खिलाफ पहले बड़ेबाजी करते हुए भारतीय टीम ने २८५ रनों का स्कोर खड़ा किया था। टीम इंडिया के लिए स्मृति मंधाना ने कमाल की पारी खेली और ८३ रन बनाए। उनके अलावा हरमनप्रीत कौर (५८) और दीप्ति शर्मा (५७) ने भी अर्धशतक लगाया। भारत के २८५ रनों के जवाब में इंग्लैंड की टीम १७० रनों पर सिमट गई और मेहमानों ने पहली पारी में ही ११५ रनों की बढ़त हासिल कर ली। भारत के

लिए क्रांति गौड़ ने पंजा खोला और ५ विकेट हासिल किए।

यास्तिका भाटिया ने किया शतकीय प्रहार

पहली पारी में ११५ रनों की बढ़त हासिल करने के बाद दूसरी पारी में टीम इंडिया के लिए यास्तिका भाटिया ने शतक लगाया। उन्होंने १५८ गेंदों पर ११३ रनों की पारी खेली। उनके अलावा स्मृति मंधाना (७०) और ऋचा घोष (५०*) ने अर्धशतक लगाया। भारत ने ३४१/७ पर अपनी पारी घोषित कर दी और इंग्लैंड को ४५७ रनों का लक्ष्य दिया।

इंग्लैंड की दूसरी पारी में भी बल्ले से फ्लॉप रही। टीम मात्र १८६ रनों पर सिमट गई और भारत ने इसी के साथ मुकाबले को २७० रनों से अपने नाम कर लिया। भारत के लिए स्नेह राणा ने कमाल की गेंदबाजी की और ४ विकेट हासिल किए। उनके अलावा सयाली सतधरे, क्रांति गौड़ और दीप्ति शर्मा को २-२ विकेट मिले।

ज्वेरेव को हराकर डिफेंड किया खिताब



का यह पांचवां ग्रैंड स्लैम खिताब है और वह अब अपने सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी कार्लोस अल्काराज के सात ग्रैंड स्लैम खिताबों के और करीब पहुंच गए हैं.

मैच का बड़ा टर्निंग पॉइंट

तीसरे सेट के दौरान मैच का सबसे अहम पल तब आया, जब अलेक्जेंडर ज्वेरेव एक झॉप शॉट तक पहुंचने की कोशिश में फिसल गए. वह दाहिने घुटने को पकड़कर कोर्ट पर गिर पड़े, जिससे कुछ देर के लिए दर्शकों की सांसें थम गईं. हालांकि, मेडिकल सहायता के बिना उन्होंने मैच जारी रखा, लेकिन इसके बाद उनकी लय बिगड़ गई. सिनर ने इसका पूरा फायदा उठाते हुए सर्विस ब्रेक

हासिल किया और मुकाबले पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली.

लगातार १०वीं बार ज्वेरेव को हराया

यानिक सिनर ने इस जीत के साथ अलेक्जेंडर ज्वेरेव पर अपना दबदबा भी कायम रखा. यह लगातार १०वां मौका है, जब उन्होंने जर्मन खिलाड़ी को हराया है. दोनों के बीच हाल के वर्षों में हुए मुकाबलों में सिनर लगातार बेहतर साबित हुए हैं. २४ वर्षीय यानिक सिनर पिछले कुछ वर्षों में लगातार बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं. ग्रैंड स्लैम, एटीपी टूर और बड़े टूर्नामेंटों में उनकी निरंतर सफलता ने उन्हें नई पीढ़ी के सबसे सफल खिलाड़ियों में शामिल कर दिया है.

ड्रग्स को हकीम की 'दवा' बता सच छिपाते रहे अख्तर

नई दिल्ली : पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर और मोहम्मद आसिफ से जुड़े ड्रग्स के खुलासों पर क्रिकेट की दुनिया हैरान है. गृह मंत्रालय के पूर्व अंडर सेक्रेटरी आरवीएस मणि ने कहा है कि पाकिस्तानी टीम के खिलाड़ी शोएब अख्तर और मोहम्मद आसिफ समेत टीम के दूसरे सदस्य जब भी भारत आते थे ड्रग्स के लेकर आते थे. इस खुलासे ने पाकिस्तान क्रिकेट के काले सच को उजागर कर दिया है.

आरवीएस मणि ने एएनआई के साथ एक पॉडकास्ट में कहा है कि शोएब अख्तर और मोहम्मद आसिफ ने स्वीकार किया था कि शोएब अख्तर और मोहम्मद आसिफ ने भारत में पाकिस्तानी हाई कमिश्नर के सामने खुद स्वीकार किया कि वे ड्रग्स लेकर आए हैं, इसके बाद पाकिस्तान हाई कमिश्नर ने इन खिलाड़ियों को वापस भेज दिया. पाकिस्तान क्रिकेट टीम एक के बाद एक विवादों में उलझी थी. ओवल में बॉल टेम्पेरिंग विवाद, कप्तानी संकट और बोर्ड में बदलाव के बीच पाकिस्तानी खिलाड़ी टीम इंडिया के खिलाफ तैयारियों में जुटी थी. लेकिन ठीक मैच से एक दिन पहले १६ अक्टूबर को पाकिस्तान क्रिकेट को सबसे बड़ा झटका लगा. १७ अक्टूबर को पाकिस्तान-श्रीलंका के बीच पहला मैच था.

तभी एक धमाका सा हुआ. पाकिस्तान टीम के दो मुख्य तेज गेंदबाज शोएब अख्तर और मोहम्मद आसिफ डोप टेस्ट में पॉजिटिव पाए गए. इसका मतलब था कि ये दोनों खिलाड़ी खेल के नियमों के विपरित प्रतबंधित सामग्री का इस्तेमाल कर रहे थे.

पाकिस्तान टीम में तूफान मच गया, दोनों खिलाड़ियों को भारत की पहली ही फ्लाइट से वापस पाकिस्तान भेज दिया गया.

पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के तत्कालीन चेयरमैन नसीम अशरफ ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि बोर्ड ने 25 खिलाड़ियों का टेस्ट किया था और दो पॉजिटिव नतीजों की पुष्टि अब मलेशिया में वर्ल्ड एंटी-डोपिंग एजेंसी (WADA) से मान्यता प्राप्त लैब ने कर दी है.

